>

Title: Resolution regarding need to set up a Central University in the Motihari district of the State of Bihar.

श्री ओम प्रकाश यादव (सिवान): सभापति महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं --

> "कि बिहार राज्य में उच्चतर शिक्षा की बढ़ती हुई आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, यह सभा सरकार से आग्रह करती है कि वह बिहार राज्य के मोतिहारी जिले, जो हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 'कर्मभूमि' भी रहा है, में एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना करे। "

सभापति महोदय, आपने मुझे मोतिहारी में एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय आरंभ करने के संबंध में मेरे द्वारा दिये गये संकल्प पर बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपके प्रति आभार व्यक्त करता हूं।

महोदय, मेरा यह संकल्प उच्च शिक्षा से संबंधित है। केन्द्र सरकार बहुत समय से यह महसूस कह रही थी कि देश में अगर कुछ चुनिंदा संस्थाओं को छोड़ दिया जाये, तो शिक्षण के उत्कृष्ट संस्थाओं का अभाव है। हमारे देश में आईआईटी और आईआईएम जैसी कुछ ही संस्थाएं हैं, जिनकी गुणवत्ता विश्व स्तर की हैं। सरकार का प्रयास रहा है कि इस प्रकार के संस्थानों की संख्या बढ़ायी जाये। वर्तमान में देश में कुल विश्वविद्यालयों की संख्या 504 है, जबकि वर्ष 1950 में देश में कुल 27 विश्वविद्यालय थे। वर्तमान आंकड़ों के अनुसार देश में 42 केन्द्रीय विश्वविद्यालय और 243 राज्य विश्वविद्यालय, 53 निजी विश्वविद्यालय, 130 डीम विश्वविद्यालय,33 राष्ट्रीय महत्व के संस्थान और 5 अन्य संस्थान हैं, जो देश में उच्च शिक्षा प्रदान करने का कार्य करते हैं। महाविद्यालयों की संख्या वर्ष 1950 में 578 थी, जो आज बढ़कर 30 हजार से भी ज्यादा हो गयी है। इस क्रम मेंष मैं केन्द्रीय विश्वविद्यालय के मुद्दे की तरफ आना चाहूंगा। वर्तमान समय में देश में केन्द्रीय विश्वविद्यालय की संख्या आवश्यकता से बहुत कम है। केन्द्रीय विश्वविद्यालयों की हालत राज्य विश्वविद्यालयों से बेहतर इसलिए मानी जाती है कि इन्हें वित्तीय संसाधन केन्द्र सरकार द्वारा दिये जाते हैं। यहां के शिक्षकों और अन्य कर्मचारियों की सेवा शर्तें अन्य समकक्ष लोगों से बेहतर होती है। इसी कारण भिन्न-भिन्न राज्य सरकारों द्वारा यह मांग की जाती रही है कि उनके राज्यों में भी केन्द्रीय विश्वविद्यालय स्थापित किये जायें।

इन्हीं मांगों को ध्यान में रखते हुए सरकार ने केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2006 पारित किया है, जिसके अंतर्गत कई नए विश्वविद्यालय स्थापित किए जाने का प्रस्ताव है। आज शिक्षा बिहार के सबसे बड़े उद्योंगों में से बन गया है। राज्य में हर वर्ष उच्च शिक्षा संस्थाओं में लाखों की संख्या में छात्र प्रवेश पाने के लिए आवेदन करते हैं, लेकिन राज्य में उच्च शिक्षा के बेहतर संसाधनों की कमी के चलते उन्हें अन्य राज्यों की तरफ जाना पड़ता है, लेकिन यदि हम ऐतिहासिक संदर्भ में देखें, यह राज्य एक समय राष्ट्र में ही नहीं, पूरे विश्व में शिक्षा के संबंध में अग्रणी था। नालंदा विश्वविद्यालय और विक्रमशिला विश्वविद्यालय विश्व की प्राचीनतम शिक्षण संस्थाओं में थे। इन संस्थाओं में पूरे विश्व से छात्र अध्ययन करने आते थे, लेकिन मध्य काल में बिहार शिक्षा के मानचित्र से लुप्त हो गया क्योंकि यहां जितने भी शिक्षण केन्द्र थे, वे आक्रमणकारियों द्वारा तहस-नहस एवं बर्बाद कर दिए गए। अंग्रेजों के समय में पटना विश्वविद्यालय स्थापित किया गया, जो उस समय देश की श्रेष्ठ शिक्षण संस्थाओं में से एक था। लेकिन इतने बड़े राज्य में मात्र एक विश्वविद्यालय का होना बिल्कुल अपर्याप्त था। वर्तमान में बिहार में कुल 14 विश्वविद्यालय हैं और इनमें से कोई भी केंद्रीय विश्वविद्यालय नहीं है। केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम के अंतर्गत बिहार में एक केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना की जानी है, लेकिन वह भी राजनीतिक कारणों से खटाई में पड़ी हुई है।

महोदय, इस संकल्प को लाने के पीछे मेरा मकसद इस अनिश्चितता की स्थिति को दूर करना है। जब से बिहार में केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना का निर्णय हुआ, तब से इसके स्थान को लेकर राज्य सरकार और केंद्र सरकार के बीच शीतयुद्ध का वातावरण बना हुआ है। राज्य सरकार नए केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना मोतिहारी में करना चाहती है, जबकि केंद्र सरकार इसकी स्थापना गया में करना चाहती है। दोनों पक्ष अपने-अपने तर्क दे रहे हैं। इस संबंध में मानव संसाधन विकास मंत्रालय का यह कहना है कि बिहार सरकार ने मंत्रालय को केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए तीन वैकल्पिक स्थानों सुझाव दिया था, ये तीनों स्थान पूर्वी चम्पारण जिले के अंतर्गत मोतिहारी में स्थित हैं। लेकिन मंत्रालय को इनमें से कोई भी स्थान उपयुक्त प्रतीत नहीं होता। मंत्रालय का तर्क यह है कि राज्य सरकार ने जो स्थान सुझाया है, वह रेल, सड़क एवं वायु मार्ग से अच्छी तरह नहीं जुड़ा है अर्थात वहां पर परिवहन अवसंरचना का अभाव है। ऐसे स्थान पर शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करना संभव नहीं है और यदि ऐसा नहीं हो सका, तो फिर यह संस्थान उत्कृष्टता का वह अवसर नहीं पा सकेगा, जिसकी परिकल्पना उस अधिनियम में की गयी है। केंद्र सरकार ने यह भी कहा है कि मोतिहारी में राज्य विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए वह हर संभव सहायता देने को तैयार हैं। बाद में केंद्र सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने राज्य सरकार की स्वीकृति या सहमति के बिना ही गया में केंद्रीय विश्वविद्यालय के लिए जमीन की पहचान कर ली है,

लेकिन यहां हमें यह समझना होगा कि राज्य सरकार की राय में और केंद्र सरकार की राय में अंतर क्यों है। इसके साथ-साथ यहां और भी मुद्दे हैं जिनकी तरफ इस सदन का ध्यान मैं आकृष्ट करना चाहूंगा। मैं सर्वप्रथम यह बताना चाहूंगा कि मोतिहारी उत्तरी बिहार का एक महत्वपूर्ण शहर है। यह कोई नया नगर नहीं है। यहां नगरपालिका की स्थापना 1889 में की गयी थी यानि आज से लगभग 135 वर्ष पहले, जब आज के कई प्रमुख नगरों की नींव भी नहीं रखी गयी थी। प्रसिद्ध लेखक जॉर्ज ऑरवेल जिनकी पुस्तकें - एनिमल फार्म और 1984, विश्व प्रसिद्ध रही हैं, का जन्म भी यहीं हुआ था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पूर्वी चम्पारण जिला हमारे राष्ट्रपित महात्मा गांधी की कर्मभूमि रही है। यही वह स्थान है जहां बापू ने पहली बार सत्याग्रह का प्रयोग किया। इस हथियार ने आगे चलकर भारत ही नहीं, बल्कि विश्व के इतिहास को भी बदल दिया। 20वीं सदी की शुरूआत में जब दुनिया के बाकी देश विश्वयुद्धों की ज्वाला में जल रहे थे, मानवता को एक ऐसी सीख, एक ऐसी सोच दी जो शाश्वत है और अपने आप में एक सम्पूर्ण विचारधारा है। महात्मा गांधी ही नहीं, इस जमीन ने देश को अन्य अनेक विभूतियां भी दी हैं, जिनमें रामर्षि देव द्विवेदी, राजकुमार शुक्ला, कमलनाथ तिवारी, बटुक मियां, अजीजुल हक शामिल हैं। महात्मा गांधी के चम्पारण आंदोलन में राजकुमार शुक्ला की महत्वपूर्ण भूमिका को कौन नहीं जानता है।

16.00 hrs.

अतः मोतीहारी हमेशा से उत्तरी बिहार का केन्द्र बिंदु रहा है। उस स्थान को पिछड़ा कहना मेरे हिसाब से सही नहीं होगा। यदि वह पिछड़ भी है तो केन्द्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना के माध्यम से उसका पिछड़ापन दूर होगा। मेरा तो यह सुझाव होगा कि केन्द्र सरकार को अपने सारे उत्कृष्ट साधन और कार्यालय ज्यादा से ज्यादा पिछड़े इलाकों में खोलने चाहिए। इससे न सिर्फ उन इलाकों का विकास होगा, बल्कि वहां की निर्धन जनता को रोज़गार और आय के स्रोत मिलेंगे।

दुर्भाग्य से हमारी नीतियां ऐसी होती हैं कि जो स्थान पहले से ही विकसित हैं, उनके विकास के लिए ज्यादा योजनाएं बनाई जाती हैं और ज्यादा धन आबंटित किया जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि विकसित क्षेत्र और ज्यादा विकसित हो जाते हैं और पिछड़े क्षेत्र पिछड़ते चले जाते हैं। किसी क्षेत्र का पिछड़ा होना अयोग्यता नहीं होनी चाहिए, बल्कि उसकी सबसे बड़ी योग्यता होनी चाहिए, तब हमारे देश का संतुलित विकास सम्भव हो सकेगा।

सभापति जी, मैं चाहूंगा कि इस विषय पर बहस में ज्यादा से ज्यादा मेरे साथ भाग लें इसलिए मैं बिंदु पर अपनी राय व्यक्त करके अपनी बात समाप्त करूंगा। भारत का संविधान संघात्मक है यानि राज्यों में अपनी चुनी हुई सरकार होती है, जो राज्यों की जनता की आकांक्षाओं और विचारों को स्वर देती है। राज्य सरकार जनता की आवाज़ होती है, विशेष तौर से बिहार सरकार ने बिहार के विकास के लिए बहुत प्रयास किए हैं। माननीय नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार हर क्षेत्र में आज आगे बढ़ रहा है। वर्षों के बाद भारत के इस उपेक्षित राज्य को आज ऐसी सरकार मिली है, जो विकास और समृद्धि के लिए प्रतिबद्ध है। इसीलिए बिहार की जनता मजबूती से उनके पीछे खड़ी है। मेरा निवेदन होगा कि केन्द्र सरकार को भी मजबूती से राज्य सरकार के साथ खड़ा होना चाहिए। यदि राज्य सरकार यह चाहती है कि केन्द्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना मोतीहारी में हो तो केन्द्र सरकार को इसमें कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

मैं आपके माध्यम से मानव संसाधन विकास मंत्री जी से अपील करना चाहता हूं कि बिहार में केन्द्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना मोतीहारी में की जाए और इस बारे में वर्तमान गतिरोध को शीघ्रातिशीघ्र समाप्त किया जाए, क्योंकि ऐसा करना अतिआवश्यक है। इन्हीं शब्दों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करते हुए आपको धन्यवाद देता हूं।

MR. CHAIRMAN : Motion moved:

> "Having regard to the growing need for higher education in the State of Bihar, this House urges upon the Government to set up a Central University in the Motihari District of the State of Bihar, which has also been the 'Karmabhoomi' of Mahatma Gandhi, the Father of our Nation."

श्री अधीर चौधरी (बहरामपुर): सभापति जी, मेरे साथी ने जो यहां संकल्प पेश किया है, इस संकल्प के बारे में मैं अपने विचार रखना चाहता हूं। बिहार ही नहीं, बल्कि हिन्दुस्तान के हर सूबों में आम लोगों के अंदर, अपने बच्चों के लिए उच्च शिक्षा का एक माहौल पैदा हुआ है। जब यह माहौल पैदा होता है, तब देश में उच्च शिक्षा संस्थानों की तादाद बढ़ाने की जरूरत महसूस की जाती है। हम सब मानते हैं कि उच्च शिक्षा लोकतंत्र के और मजबूतीकरण के लिए देश के विकास के लिए तथा नई शताब्दी का आगे बढ़कर मुकाबला करके कामयाबी की फसल उगाने में सबसे बड़ा योगदान होगी।

आज़ादी के बाद ही हमारे देश के नेतागणों ने हायर एजुकेशन के बारे में सोचा था इसीलिए सेंट्रल यूनिवर्सिटी एक्ट पारित हुआ था। इस सेंट्रल यूनिवर्सिटी एक्ट के तहत हिन्दुस्तान में बहुत सारी यूनिवर्सिटीज का गठन हुआ है। इसी के मद्देनज़र मेरे साथी यह संकल्प लाए हैं कि बिहार में मोतीहारी जिले में एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय हो। बिहार हिन्दुस्तान की सभ्यता के लिए एक जाना-माना सूबा कहलाता है। बिहार कभी पिछड़ा सूबा था, लेकिन आज आंकड़ों के सामने रखकर यह दावा किया जाता है कि बिहार काफी आगे बढ़ रहा है। बिहार में आज अगर आईएएस, आईपीएस की संख्या देखी जाए तो पहले की तुलना में बहुत ज्यादा है। इससे पता चलता है कि बिहार ने आज आगे बढ़ने का हौसला दिखाया है। आज मोतीहारी में सेंट्रल यूनिवर्सिटी बनाने की बात आई, लेकिन सरकार की तरफ से पहले गया को उसकी कनैक्टिविटी और इंफ्रास्ट्रक्चर को देखते हुए चुना गया था। हमारी एचआरडी मिनिस्ट्री बिहार के मुख्यमंत्री से वार्ता के दौरान यह फैसला करेगी कि यह सेंट्रल यूनिवर्सिटी गया में बने या मोतीहारी में बने। लेकिन हम नहीं चाहते हैं कि यूनिवर्सिटी के स्थान को लेकर कोई तनाव पैदा हो। इसलिए एक यूनिवर्सिटी गया में बना दीजिए और एक मोतीहारी में बना दीजिए, जिससे स्थान का झगड़ा ही न रहे और साथ ही साथ बिहार के लोगों की इच्छा का भी सम्मान हो। माननीया पुरन्देश्वरी जी यहां बैठी हुई है, काफी जागरुक महिला हैं। हमारे पास नॉलिज कमीशन की रिपोर्ट आई है, नॉलिज कमीशन चाहता है कि वर्ष 2015 तक 1500 यूनिवर्सिटीज बन जाएं। लेकिन आज जिस रफ्तार से हम यूनिवर्सिटीज की स्थापना कर रहे हैं, मुझे शक है कि हम इस उद्देश्य को पूरा भी कर सकेंगे।

आज उच्च शिक्षा में gross एनरोलमेंट ratio हमारे लिए खुशखबरी नहीं लाते हैं। इसमें एनरोलमेंट केवल 10 से 11 प्रतिशत ही हो रहा है। अगर हमें आगे बढ़ना है तो हमें इसमें ज्यादा से ज्यादा एनरोलमेंट बढ़ाना चाहिए। केवल 18–24 साल के ऊपर वाले 7 प्रतिशत बच्चे ही हायर एजुकेशन में जाते हैं जोकि बहुत कम संख्या है।

शिक्षा को हम दो भागों में बांट सकते हैं। एक प्राइमरी और दूसरा उच्च शिक्षा। प्राइमरी हिस्सा वह है जहां हमारे बच्चे का बेस बनता है और हायर एजुकेशन में गुणवत्ता के जरिये हम बच्चे का स्थान सुनिश्चित करते हैं।

हिंदुस्तान में बहुत सारे आईलैंड ऑफ एक्सीलेंस हैं जैसे आईआईएम और आईआईटी। लेकिन जहां तक यूनिवर्सिटी की बात है तो यूनिवर्सिटी ऐसी जगह है जहां हर तरीके के लोगों को शिक्षा दी जाती है। इसलिए हम चाहते हैं कि हिंदुस्तान में ज्यादा से ज्यादा यूनिवर्सिटीज बनें। यूनिवर्सिटी सेंट्रल गवर्नमेंट बनाती है या निजी क्षेत्र में लोग बनाते हैं तथा जिनकी देखरेख के लिए यूजीसी है, एआईसीटीई है, मैक है और ये सारी संस्थाए एचआरडी मिनिस्ट्री से तहत काम करती हैं।

हिंदुस्तान में जहां स्टेट यूनिवर्सिटीज 285 हैं वहीं सेंट्रल यूनिवर्सिटीज की संख्या जम्मू-कश्मीर को मिलाकर 44 हैं। हम बार-बार सदन में आवाज उठाते हैं कि सेंट्रल यूनिवर्सिटीज इतनी कम क्यों हैं? हम चाहते हैं कि हमारी जीडीपी का 1.5 परसेंट हायर एजुकेशन में लगे। एजुकेशन ऐसा क्षेत्र है जिससे हमारे आने वाली संतति को आगे बढ़ने का मौका मिलेगा। लेकिन हमारी यूनिवर्सिटी का क्या हाल है? यूनिवर्सिटी में पढ़ने वाले स्टूडेंट्स ज्यादा नहीं हैं। क्वालिटी में कमियां रह जाती हैं और हमें इसका परिणाम भुगतना पड़ता है। आज विश्व में 50 यूनिवर्सिटी हैं लेकिन हम अपना नाम लिख नहीं सकते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि हमारे यहां टैलेंट की

कमी है। हमारे यहां टैलेंट की कमी नहीं है, लेकिन हम एक्सेस नहीं दे पा रहे हैं। अगर हम अपने देश को आगे बढ़ाना चाहते हैं तो हमें ज्यादा से ज्यादा higher education में एक्सेस देना पड़ेगा।

महोदय, हम चाहते हैं कि बिहार में नहीं बल्कि हिंदुस्तान के हर सूबे में जहां जरूरत है वहां सैंट्रल यूनिवर्सिटी बनाई जाए। दिल्ली भारत की राजधानी है, सारा पैसा दिल्ली में इन्वेस्ट किया जाता है। यहां सैंट्रल यूनिवर्सिटी की संख्या चार से पांच है। क्यों? "कैरी कोल टू न्यू कैसल" यानी जहां सब कुछ है वहीं धनराशि का निवेश होता है। ऐसा क्यों कर रहे हैं? दिल्ली में बहुत इफ्रास्ट्रक्चर है। यहां निजी क्षेत्र में काफी विकास हुआ है। आप दूर दराज इलाकों को देखिए, ईस्टर्न इंडिया को देखिए। बिहार, बंगाल, झारखंड, नार्थ ईस्ट स्टेट्स उड़ीसा को देखिए। यहां रीजनल डिसक्रिमिनेशन है, रीजनल इम्बैलेंस है। आप ईस्टर्न इंडिया को देखिए, यहां निजी क्षेत्र में प्रगति नहीं है। साउथ इंडिया में निजी क्षेत्र का विकास हुआ है। आप तमिलनाडु और कर्नाटक में देखिए। जहां से माननीय सदस्या आती हैं, आंध्र प्रदेश को देखिए। यहां निजी क्षेत्र में एजुकेशन इंस्टीटयूशन, यूनिवर्सिटी, मेडिकल कालेज में काफी प्रगति हुई है।

जहां तक ईस्टर्न इंडिया की बात है, बंगाल में एक ही सैंट्रल यूनिवर्सिटी है शांति निकेतन। हम रविन्द्र नाथ टैगोर जी के जमाने से शांति निकेतन का नाम सुनते आ रहे हैं और आज भी वही एक सुन रहे हैं। आज पश्चिम बंगाल की आबादी आठ करोड़ से ऊपर हो गई है, 19 डिस्ट्रिक्ट हैं लेकिन एक ही सैंट्रल यूनिवर्सिटी है। यहां क्यों और यूनिवर्सिटी नहीं बनाई जाती हैं? पार्लियामेंट में भी प्रस्ताव पेश किया गया था कि अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी का एक कैम्पस मुर्शिदाबाद और एक केरल में होगा। लेकिन आज तक मुर्शिदाबाद में अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी का कोई काम नहीं हुआ है। मुझे लगता है कि शिक्षा को लेकर रीजनल इम्बैलेंस है, रीजनल डिसक्रिमिनेशन है। हम कहते हैं दिल्ली में और यूनिवर्सिटीज़ खोलिए, हमें आपत्ति नहीं है लेकिन एजुकेशन के क्षेत्र में हर सूबे को मद्देनजर रखते हुए धनराशि आबंटित की जाए और ज्यादा से ज्यादा राशि निर्धारित करके एजुकेशन की सुविधाओं में इज़ाफा किया जाए। मैं चाहता हूं कि इस संकल्प को लेकर हम सबके बीच कोई टकराव न हो, तनाव न हो। हम बिहार की प्रगति चाहते हैं। हिंदुस्तान में शिक्षा की प्रगति ही हमारा लक्ष्य है, हमारा मकसद है। यही कहते हुए मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्री हुक्मदेव नारायण यादव (मधुबनी): माननीय सभापति महोदय, मैं ओम प्रकाश यादव जी और अधीर रंजन जी को धन्यवाद देता हूं। ओम प्रकाश जी ने मोतिहारी में केंद्रीय विश्वविद्यालय के संबंध में प्रस्ताव रखा है और विस्तार से चर्चा की है। सबको इस बारे में सोचना चाहिए, समझना चाहिए। मोतिहारी जिसे चंपारन कहते हैं, पूर्वी-पश्चिमी चंपारन है लेकिन पहले चंपारन था। हमारे यहां जिले की गिनती में कहते थे कि दरभंगा, मुजफ्फरपुर, सारन और चंपारन। ये चार जिले गंगा के उस पार होते थे। जिसमें सारण में से तीन जिले हो गये, छपरा, सीवान, गोपालगंज। लेकिन जो चम्पारण था, उस चम्पारण ने अपने नाम को बरकरार रखा और उसके महत्व को देखते हुए ही जिले के विभाजन के समय ही उसका नाम मोतिहारी और बेतिया न रखकर पूर्वी चम्पारण और पश्चिमी चम्पारण कर दिया गया, क्योंकि उस मिट्टी का संबंध महात्मा गांधी जी के साथ जुड़ा हुआ है। महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय आंदोलन को ही केवल वहां से दिशा नहीं दी, बल्कि महात्मा गांधी को उस मिट्टी से बहुत प्रेरणा मिली थी और उस मिट्टी के साथ महात्मा गांधी का आध्यात्मिक संबंध जुड़ गया था और आज भी उस मिट्टी का महात्मा गांधी के साथ आध्यात्मिक संबंध जुड़ा हुआ है। जो ओम प्रकाश जी ने कहा कि रामचंद्र शुक्ल जी जो एक साधारण किसान थे, आज कोई साधारण किसान रामचंद्र शुक्ल जी के जैसा आ जाए और एम.पी. को कोई आग्रह करे तो वह मानने के लिए तैयार नहीं होंगे। लेकिन उस साधारण किसान ने महात्मा गांधी से आग्रह किया कि आप एक बार वहां चलिये और उनकी बात को मानकर महात्मा गांधी जी पहुंच गये और उस समय भारत के सर्वश्रेष्ठ विद्वान और भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद जी के यहां गांधी जी पहुंचे और वहां से राजेन्द्र बाबू साथ चले और भारत के समाजवादी आंदोलन के प्रबल स्तम्भ आचार्य कृपलानी भी थे, वह उस समय मुजफ्फरपुर में कालेज में प्राध्यापक का काम करते थे, वहां से कृपलानी जी साथ हुए और जय प्रकाश नारायण जी के ससुर ब्रज किशोर बाबू दरभंगा के थे, वह आजादी आंदोलन के स्तम्भ थे। उन सबने मिलकर वहां निल्हों के खिलाफ आंदोलन किया। मैं समझता हूं कि चम्पारण की भूमि को नमस्कार करना चाहिए, प्रणाम करना चाहिए, जब हम स्वतंत्रता आंदोलन की बात करें तो चम्पारण की उस भूमि को गांधी जी के साथ नमस्कार करना चाहिए, जहां से एक प्रेरणा मिली थी, अंग्रेजों के खिलाफ सत्याग्रह का असली स्वरूप, व्यावहारिक स्वरूप अगर कहीं से प्रकट हुआ था तो महात्मा गांधी के नेतृत्व में चम्पारण की भूमि से प्रकट हुआ था। यह नेपाल की सीमा पर है, दो संस्कृतियों का संगम है। राजा जनक नेपाल के राजा थे - विदेहराज। महाराज जी जब आप कथा वांचते हैं तो वह राजा जनक की कथा ही प्रारम्भ होती है और रामकथा तो उससे जुड़ी हुई है। क्योंकि जनकपुर से राम की यात्रा प्रारम्भ होती है और सेतुबान रामेश्वरम तक जाती है। अगर भारत की सांस्कृतिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक सभी कड़ियों को जोड़ें तो राम उत्तर से जनकपुर से चलते हैं और दक्षिण में सेतुबान रामेश्वर तक जाते हैं। इसलिए राम उत्तर और दक्षिण के देव हैं और उस चम्पारण की भूमि का जो एरिया है, वही श्रीराम और सीता के क्षेत्र वाला एरिया है, जुड़ा हुआ है, उसका आध्यात्मिक संबंध है, सांस्कृतिक महत्व है, धार्मिक महत्व है, राष्ट्रीय महत्व है, बौद्धिक महत्व है।

राजा जनक के दरबार में जो नवरत्न थे, उनमें एक याज्ञवल्क्य ऋषि जिनका नाम कौन नहीं जानता। गार्गी और मैत्रेयी जैसी प्रतिभाशालिनी और वैसी नारी शायद भारत की मिट्टी से प्रकट हो जाए तो भारत का इतिहास बदल जायेगा। वह भूमि वहीं है, महर्षि याज्ञवल्क्य की भूमि, जिस भूमि का मैं प्रतिनिधि हूं, वही वरदायिनी है, जहां याज्ञवल्क्य को भगवती ने वर दिया था और उनकी आवाज और विद्या पुनः लौट आई थी। राजा जनक और रामायणकाल से जुड़े हुए न्यायशास्त्र के रचयिता, दृष्टा, मंत्रसृष्टा महर्षि गौतम ऋषि का आश्रम वहीं है, जहां का मैं प्रतिनिधि हूं। उसी के बगल में माता अहिल्या का आश्रम है, जो पत्थर से जड़ से चेतन में प्रकट होने वाली अगर कहीं विश्व में और भारतीय संस्कृति में कोई कहानी है तो वहीं अहिल्या का आश्रम है, जिनका जड़ से चेतन में परिवर्तन हुआ था, रूपांतरण हुआ था। मुनि श्राप जो दीन्हा, अति भल कीन्हा, परम अनुग्रह माना। उस समय माता अहिल्या ने कहा कि ऋषि ने जो श्राप दिया था, उन्होंने कितना अनुग्रह किया था कि आज दशरथ नंदन श्री राम के चरण स्पर्श का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। इसलिए मैंने कहा कि फुलवारी में जहां राम-सीता का मिलन हुआ था और दोनों गिरा अनयन-नयन बिनु पानी। तुलसी दास जी की रचना भी अद्भुत है। गिरा अनयन-नयन बिनु पानी। राम और सीता जब ओझल होकर उस फुलवारी में एक-दूसरे पर दृष्टि देते हैं और दोनों की आंख से आंख मिलती हैं तो दोनों एकटक देखते रह गये, दोनों की पलक नहीं गिरी, वह भूमि भी वहीं पर है। महर्षि विश्वामित्र दशरथ नंदन श्रीराम और लक्ष्मण को लेकर गये थे और राजा जनक के यज्ञ में रुके थे। दोनो दशरथ नंदन, राम और लक्ष्मण महर्षि विश्वामित्र के पैर दबाते थे और वहीं शिक्षा लेते हुए, धनुष यज्ञ तक गए। वह भी उसी भूमि से जुड़ी हुई जगह है। मैं इसलिए इन बातों को कहता हूँ कि हम चंपारण को केवल एक मिट्टी न समझें। बल्कि चंपारण एक धरती है। जहां से हमारी संस्कृति, सभ्यता, प्राचीनता का उद्गम स्त्रोत रहा है। कहीं न कहीं हमारे शश्वत, सनातन प्रवाह का उद्गम स्थल रहा है।

सभापति महोदय : अब आप सेंट्रल यूनिवर्सिटी पर भी बोलिए।

श्री हुक्मदेव नारायण यादव : मैं उस पर आ रहा हूँ। वहां विश्वविद्यालय बनना चाहिए। जहां न्याय शास्त्र का जन्म हुआ, जहां विश्वामित्र जी पधारे, जहां गौतम ऋषि गए, जहां इतने विद्वानों की जगह थी, वहां अगर केंद्रीय विश्वविद्यालय बनाएंगे, तो आप उनको बहुत सम्मानित करेंगे। भारतीय संस्कृति, भारतीय धर्म और भारतीय

इतिहास को आप सम्मानित करेंगे। महाबल मिश्र जी उसी मिट्टी के हैं और वे मेरे वोटर हैं। दिल्ली में एमपी हैं पर वे मेरे वोटर हैं। वे उसी मिट्टी के हैं इसीलिए मेरी विनम्र प्रार्थना है।

केंद्रीय विश्वविद्यालय वहीं बनाना है, जैसे अधीर रंजन जी कह रहे थे । हमारे बीच में गंगा है। गंगा के दक्षिण की भूमि मगध भूमि है और गंगा के उत्तर की भूमि को हम मिथिलांचल की भूमि, राजा जनक की भूमि, मण्डन मिश्र, मण्डन भारती की भूमि कहते हैं। आज अगर हम उस भूमि पर केंद्रीय विश्वविद्यालय बनाते हैं, तो जो मण्डन भारती, जहां स्वयं शंकराचार्य जी को अपने अद्वैत दर्शन के लिए मण्डन मिश्र से शास्त्रार्थ करना पड़ा और जब तक मण्डन मिश्र उनके दर्शन को स्वीकार नहीं कर लिए तब तक भारत में उनके अद्वैत दर्शन को स्वीकृति नहीं मिली थी। वह मण्डन भारती की भूमि है। मैं शिक्षा की बात इसलिए कह रहा हूँ कि अगर कोई यह समझते हैं कि वह भूमि कैसी है। हां, यह जरूर है कि कोसी, कमला, गंडक, तिलजुगा, बलान और अधवारा समूह, इन नदियों में बाढ़ आने के कारण हम निर्धन जरूर हो गए।

सभापति महोदय, हमारे घर में निर्धनता जरूर आ गई है, हमारे घर में रोशनी नहीं जली, हमारे बच्चे भूखे जरूर रहे लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में, विद्या के क्षेत्र में, बुद्धि के क्षत्र में, ज्ञान के क्षेत्र में, योग्यता के क्षेत्र में, दर्शन के क्षेत्र में हमने हमेशा उस मिथिलांचल की मिट्टी से सारे भारत को नहीं, सारे विश्व को एक नया दर्शन देने का काम किया है। अगर उस जगह केंद्रीय विश्वविद्यालय नहीं बनेगा तो कहां बनेगा? कहते हैं कि वहां जाने का रास्ता नहीं है। सभापति महोदय, अटल बिहारी वाजपेयी जी की देन है कि बिहार में उन्होंने अपने समय, उस समय में सड़क विभाग के मंत्री राजनाथ जी थे, और मैं राज्य मत्री था उस समय बिहार का एक जो नक्शा खींचा गया, उसके कारण सभी जगह चार लेन, दो लेन, छह लेन की सड़कें बन रही हैं। श्रीमान अटल बिहारी वाजपेयी जी की कृपा से द्वारिका से ले कर कामरूप तक छह लेन का एक्सप्रेस हाईवे बना हुआ है। कौन कहता है कि बिहार में रास्ता नहीं है। अगर कहते हैं कि वह विकसित नहीं है तो मैं हाथ जोड़ कर प्रार्थना करना चाहूंगा कि स्वर्गीय ललित नारायण मिश्र जी ने सपना देखा था, चलिए उस कोसी में, आज से पचास साल पहले मिथिलांचल और कोसी को जिन लोगों ने देखा होगा और आज अगर श्रीमान अटल बिहारी वाजपेयी जी की कृपा से बने हुए द्वारका से ले कर कामरूप तक छह लेन की सड़क पर चलते हैं तो लगता कि मिथिलांचल की धरती पर स्वर्ग का अवतरण हो रहा है, स्वर्गारोहण हो रहा है। इतनी सड़कें बन रही हैं। चौड़ी-चौड़ी सड़कें बन रही हैं। क्या हमारे शिक्षक, प्राध्यापक, प्रोफेसर सड़क मार्ग से नहीं जा सकते हैं? केवल हवाई मार्ग से जाएंगे। अगर हवाई मार्ग ही बनाना है तो मुजफ्फरपुर में एयरपोर्ट है, उसे थोड़ा विकसित कर दीजिए और वहां हवाई जहाज उतार सकते हैं। लेकिन करने का मन हो तब। मन में करना हो तब होगा। अगर आप गया में बनाना चाहते हैं तो गया भी बौद्ध की भूमि है। वहां आपको केंद्रीय विश्वविद्यालय बनाने के लिए, दुनिया में बौद्ध मत मानने वाले जितने हैं, उनसे काफी सहयोग मिल सकता है। वे भी आपको सहयोग देंगे। आपने नालंदा में केंद्रीय विश्वविद्यालय को बनाया है और वह बन रहा है। उसी के साथ ही गया भी जुड़ा हुआ है। वहां बनाइए।

सभापति महोदय : अब आप अपनी बात संक्षिप्त करें। गया में तो हवाई अड्डा है।

श्री हुक्मदेव नारायण यादव : मोतिहारी जो गांधी जी के नाम से जुड़ा हुआ है, उस केंद्रीय विश्वविद्यालय का नाम भी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय रखा जाना चाहिए। जिससे संपूर्ण भारत के लोगों को प्रेरणा मिलेगी। गांधी दर्शन एक विषय रहना चाहिए। गांधी दर्शन की उसमें पढ़ाई हो और लोग उस आधार पर आगे बढ़ें।

सभापति महोदय : अब आप संक्षिप्त करें।

श्री हुक्मदेव नारायण यादव : महोदय, मैं ज्यादा समय न लेकर केवल एक-दो बात कहकर अपनी बात समाप्त करूंगा। मैं उस क्षेत्र का हूं, उस मिट्टी का हूं और अगर उस मिट्टी के लिए अपना सम्मान न प्रकट करूं, तो फिर उस मिट्टी में जन्म लेना बेकार है। इसलिए मेरी आपसे विनम्र प्रार्थना है। ...(व्यवधान)

श्री शैलेन्द्र कुमार (कौशाम्बी): आपने लोहिया जी का नाम नहीं लिया।

श्री हुक्मदेव नारायण यादव: लोहिया जी की तो वह मिट्टी ही है उत्तर भारत, जिस समाजवादी आंदोलन में से हम लोग निकले हैं।

सभापति महोदय : आप व्यवधान न डालें। आप बोलिये और अपनी बात संक्षिप्त कीजिये।

श्री हुक्मदेव नारायण यादव : उसी मिट्टी ने कर्पूरी ठाकुर, सूरज नारायण सिंह, धनिकलाल मंडल, हुक्मदेव नारायण यादव जैसे लोगों को पैदा किया।

सभापति महोदय : अब आप संक्षिप्त करें।

श्री हुक्मदेव नारायण यादव : महोदय, वहां सभी दल के लोग, सभी राजनीतिक पार्टी के लोग, सभी विद्वान बुद्धिजीवी एक मत हैं, बिहार विधानमंडल का सर्वसम्मत प्रस्ताव है तो वादी बारह और पंच अठारह खेत किसी का और उसकी रजिस्ट्री करे कोई। जब बिहार के लोग एक मत हैं, विधानमंडल एक मत है, सभी राजनीतिक दल एक मत हैं, वहां की जनता एक मत है और जब सर्वसम्मत है कि मोतीहारी में ही केंद्रीय विश्वविद्यालय बने तब अगर केंद्र सरकार की तरफ से कोइ अड़ंगा लगता है तो नीयत पर जरूर शंका होती है कि आपकी नीयत में जरूर खोट है। आप देना कम चाहते हैं, लड़ाना ज्यादा चाहते हैं। लेकिन याद रखिए, बिहार में जागृति-चेतना है, हम परस्पर लड़ेंगे नहीं, झगड़ेंगे नहीं, केवल एक ही मंत्र आज बिहार में है, ओम् सहनाववतु, सहनऊ भुनक्तु, सहवीर्यम् करवावहि, तेजस्विनाम धितमस्तु, मां विद्धि सावहे। हम बिहार के लोग हैं, स्वाभिमान के साथ उठे हैं, संग-संग बढ़ेंगे, संग-संग चलेंगे, संग-संग मंजिल तक जाएंगे और संपूर्ण विश्व में हम अपने बिहार की बुद्धि, विवेक, ज्ञान-विज्ञान, अध्यात्म और धर्म की विजय पताका फहराकर दिखा देंगे। केंद्र सरकार उसमें अवरोध पैदा न करे, बल्कि हमारा सहयोगी बने।

श्री शैलेन्द्र कुमार (कौशाम्बी): महोदय, श्री ओम प्रकाश यादव जी जो गैर-सरकारी सदस्यों के विधायी कार्य का संकल्प लेकर आए हैं, उसके समर्थन में आपने मुझे बोलने का मौका दिया, उसके लिए मैं आपका आभारी हूं। इसमें यह मांग की गयी है कि बिहार राज्य में उच्चतर शिक्षा की बढ़ती हुयी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए बिहार के मोतीहारी जिले में एक केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना की मांग की है। मोतीहारी को यह बताया गया है कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की यह कर्मभूमि रही है। इसलिए अगर सरकार इस पर विचार करे और अगर विश्वविद्यालय खुले, अगर शब्द हटा दिया जाये, विश्वविद्यालय खुल जाये तो अच्छा है, महात्मा

गांधी जी के नाम से अगर विश्वविद्यालय खुले तो मेरे ख्याल से बहुत अच्छा होगा। इससे पूर्व ओम प्रकाश यादव जी, अधीर रंजन जी और हुक्मदेव नारायण यादव जी ने जो बात कही है, उससे अपने को सम्बद्ध करते हुए अपनी बात आगे बढ़ाना चाहूंगा।

महोदय, यह विश्वविद्यालय खोलने की बात आयी है, यह बात सत्य है कि हजारों वर्ष पुराने समय में यह देखा गया है कि आज भी अगर प्राचीन सभ्यताओं को देखें तो उससे हमें काफी सीख मिलती है। इसी सदन में नालन्दा विश्वविद्यालय को बनाने की बात उठी थी और बहुत सारे सम्मानित सदस्यों के सुझाव भी आये थे। आज चाहे वह नालन्दा विश्वविद्यालय हो, चाहे तक्षशिला विश्वविद्यालय हो या विक्रमशिला विश्वविद्यालय हो, ये ऐसे विश्वविद्यालय थे, जो हमारे ऐतिहासिक और पुराने समय के इतिहास के सूचक थे। विश्वविद्यालय की जो आज मौजूदा स्थिति है, अगर उसमें तुलना करें तो हमें बहुत मूल्यांकन करने की जरूरत है, सोचने पर हमें बाध्य करता है। आज मैं आपका ध्यान इलाहाबाद विश्वविद्यालय की तरफ दिलाना चाहूंगा। किसी वक्त इस विश्वविद्यालय को मिनी ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी भी कहा जाता था।

महोदय, आपको याद होगा कि इस विश्वविद्यालय में पढ़े हुए और जब से यह विश्वविद्यालय शुरू हुआ, अंग्रेजों के समय, आजादी के समय से लेकर अब तक का इतिहास अगर देखें तो बहुत ही स्वर्णिम अक्षरों में लिखने वाला उस विश्वविद्यालय का इतिहास होगा। हमारे तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री स्वर्गीय अर्जुन सिंह जी ने उसे केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाने की घोषणा इसी सदन में की थी और आज वह केन्द्रीय विश्वविद्यालय बना। आज मैं स्वर्गीय अर्जुन सिंह जी को भी याद करना चाहूँगा कि उन्होंने उसे केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाया, और केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाने की माँग बहुत पहले से थी। यह देखा गया कि जब से वह केन्द्रीय विश्वविद्यालय बना, तब से लेकर अब तक की स्थिति पहले से ज्यादा बदतर हो गई। पहले से ज्यादा वहाँ की शैक्षणिक व्यवस्था और वातावरण बिगड़ा। समय-समय पर आपने देखा होगा कि चाहे हमारे छात्र या विश्वविद्यालय में कार्यरत तमाम कर्मचारी, लैक्चरर या प्रोफेसर हैं, अपनी माँगों को लेकर हमेशा संघर्ष में रहे। यही कारण है कि आज जब से वह केन्द्रीय विश्वविद्यालय बना, वह पतन की तरफ जाता दिखाई पड़ रहा है। जो सैमैस्टर हैं, वह भी पिछड़ रहे हैं, शिक्षा-सत्र भी पिछड़ रहा है। 2012 की परीक्षाएँ लेट हो रही हैं, 2011 की परीक्षाएँ लेट हो रही हैं। एक दो साल पीछे की स्थिति में चल रहा है। केवल इलाहाबाद विश्वविद्यालय ही नहीं, जैसे महात्मा गांधी जी का नाम इस संकल्प में आया है, आप जानते हैं कि इलाहाबाद अपने आप में आज़ादी की लड़ाई का केन्द्रबिन्दु रहा है। आज़ादी की लड़ाई में हमारे जितने भी महापुरुष और राजनेता हुए, वे ज्यादातर स्वराज भवन और आनन्द भवन से जुड़े रहे। वहीं से एक रूपरेखा तैयार होती रही। आपने देखा होगा कि हमारे नौजवानों ने जिस समय इस देश की आज़ादी में कुर्बानी दी थी, चंद्रशेखर आज़ाद से लेकर गणेश शंकर विद्यार्थी या तमाम ऐसे नवयुवक जो बलिदान हुए और इलाहाबाद की माटी में पले-पोसे, उनकी कर्मभूमि रही आज़ादी से लेकर, और अब तक का इतिहास देखा जाए तो बहुत कुछ मिलता है। चूँकि महात्मा गांधी का नाम आया, तो मुझे याद आया कि स्वराज भवन में वे अक्सर आया जाया करते थे। आज़ादी की लड़ाई की पृष्ठभूमि और आज़ादी हासिल करने के लिए वहीं से एक रूपरेखा और रणनीति तैयार होती थी। यह बात सही है और तमाम सम्मानित सदस्यों ने यह बात कही कि जो पिछड़े इलाके हैं, वहाँ पर केन्द्रीय विश्वविद्यालय खोले जाएँ। जैसे मोतिहारी की बात इस संकल्प में आई है, ऐसे बहुत से इलाके हैं। विजय बहादुर जी हमारे बगल में बैठे हैं। इनका बुंदेलखंड एरिया है। वह भी बहुत पिछड़ा इलाका है। मेरे ख्याल से वहाँ एक ही बुंदेलखंड विश्वविद्यालय है। ऐसे तमाम पिछड़े इलाके हैं जो सूखे से ग्रस्त हैं, बाढ़ से ग्रस्त हैं, वहाँ पर प्राकृतिक संपदा भी बहुत है, लेकिन वहाँ ऐसे रोज़गार के साधन नहीं हैं जिस कारण ये इलाके पिछड़े हैं। वहाँ पर अगर ऐसे विश्वविद्यालय खोले जाएँ तो मेरे ख्याल से उस इलाके के जो लोग, जिन्होंने धर्म, इतिहास के अलावा ...(व्यवधान)

महिला और बाल विकास मंत्रालय की राज्य मंत्री (श्रीमती कृष्णा तीरथ): नवोदय स्कूल खोले हैं।

श्री शैलेन्द्र कुमार : नवोदय विद्यालय तो आपने खोले हैं। आपने याद दिलाया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देना चाहूँगा। ऐसे पिछड़े इलाकों में आपने खोले हैं। उस दिन जब एन्ट्रैन्स में प्रवेश में रिज़र्वेशन की बात आई थी तो मैंने कपिल सिब्बल साहब से कहा भी था कि नवोदय विद्यालय तो आपने खोले हैं लेकिन वहाँ पर आज तक कोई भी राजनेता या मंत्री नहीं गया, न उनकी कोई भागीदारी है।

आपने नवोदय विद्यालय की बात कही तो मैं बताना चाहूँगा कि मेरे यहाँ उत्तर प्रदेश के कौशाम्बी ज़िले में एक नवोदय विद्यालय है। वहाँ आये दिन छात्रों का आक्रोश उग्र होता है। जिस विषय के विशेषज्ञ अध्यापक होने चाहिए, वे नहीं हैं। मैंने मंत्री जी से कहा था कि आपको कम से कम केन्द्रीय विद्यालय या नवोदय विद्यालय का दौरा करना चाहिए। यह प्राइमरी स्टेज के हमारे माध्यमिक एजुकेशन से जुड़े हुए हैं। यहाँ पर आपको जिले में जाकर दौरा करना चाहिए। वहाँ आप जाएँगे तो बोर्डिंग में जो बच्चे रहते हैं, उनकी आवासीय सुविधा क्या है, उनके खाने-पीने की क्या सुविधा है, उनकी पढ़ाई की क्या सुविधा है, तमाम बातें आपको मालूम हो जाएँगी और मेरे ख्याल से किसी भी नवोदय विद्यालय का उद्घाटन नहीं हुआ है। मैंने उनको आमंत्रित भी किया। मैं तो चाहूंगा कि माननीय मंत्री जी यहां बैठी हैं, ये हमारे यहां चलें। इनके वहां जाने से वहां की व्यवस्था अपने आप सुदृढ़ हो जाएगी। प्रतापगढ़ और कौशाम्बी में नवोदय विद्यालय है। आप चल कर देख लीजिए। आज हम केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाने की बात कर रहे हैं। बहुत से ऐसे विश्वविद्यालय हैं, जिनकी प्राचीन और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि रही है। वहां से पढ़-लिख कर राजनेता, वैज्ञानिक, बड़े आफिसर्स निकल हैं। आज उन विश्वविद्यालयों को केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाने की जरूरत है। घोषणा कई बार हुई है। आपने पिछड़े इलाकों में पांच हजार मॉडल स्कूल खोलने की बात कही है। लेकिन अभी तक आप चार-पांच सौ ही खोल पाए हैं। हमारा जो लक्ष्य है, उससे आप बहुत पीछे हैं। मैंने कहीं यह पढ़ा था और डिस्कशन में भी यह बात आयी थी कि विश्वविद्यालयों में उच्च स्तर की पढ़ाई के लिए विदेश से लोगों को आमंत्रित करना चाहिए कि वह यहां निवेश करें और उच्च स्तर की एजुकेशन को बढ़ावा दें। हमारे यहां इतने विश्वविद्यालय, इंटर कॉलेजिस और स्कूल्स हैं, हम उन्हीं को नहीं कर पा रहे हैं और विदेश से लोगों को आमंत्रित कर रहे हैं। यहां हमेशा से सामान्य शिक्षा की बात पर लड़ाई हुई है कि एक ही छत के नीचे मजदूर का बेटा, रिक्शे वाला का बेटा, आईएएस या राजनीतिज्ञ का बेटा एक ही छत के नीचे पढ़े, सभी के लिए एक जैसी पढ़ाई हो, एक ही ड्रेस और पाठ्यक्रम हो। इससे वह उद्देश्य पूरा नहीं हो पाएगा। आज आपने देखा होगा कि ज्यादातर लोग अपने बच्चों को कोनवेंट में पढ़ाना चाहते हैं। अंग्रेजी का विरोध करते हैं, लेकिन चाहते हैं कि उनका बच्चा कोनवेंट में पढ़े। हम सभी को एक समान शिक्षा नहीं दे पा रहे हैं। जिस दिन आपने यहां विदेश से उच्च स्तर पर शिक्षा में निवेश करने के लिए आमंत्रित किया, उसी दिन आपकी व्यवस्था और चरमरा जाएगी। इसमें जिनके पास पैसे हैं, वे तो पढ़ा लेंगे, क्योंकि उनकी शिक्षा महंगी होगी। लेकिन गरीबों के बच्चे उनमें नहीं पढ़ पाएंगे। इससे लोगों के बीच खाई और गहरी होगी।

महोदय, मैं ज्यादा कुछ न कहते हुए इतना ही कहना चाहूंगा कि इलाहाबाद विश्वविद्यालय की स्थिति आज बहुत खराब है। छात्र आंदोलित हैं। यशपाल कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार छात्र संघ के चुनाव वहां नहीं हो पा रहे हैं। आपने संविदा पर जिन लैक्चरर्स को रखा है, वे भी आंदोलित हैं। भर्तियों में आप जनरल कोटे से तो भर्ती कर लेते हैं, लेकिन रिज़र्व कैटगरी के लैक्चरर्स की भर्तियां रह जाती हैं। इसमें बहुत बैकलॉग है। ये मेहनत से पढ़ाते हैं। इसी प्रकार से शिक्षा मित्र हैं, जो बहुत मेहनत से पढ़ाते हैं, जबकि सरकारी स्कूल का स्थायी टीचर उतनी मेहनत से नहीं पढ़ाता है। इसी प्रकार से संविदा के लैक्चरर्स मेहनत से पढ़ाते हैं। लेकिन इनके मानदेय और वेतन में विसंगतियां हैं। ये सारी व्यवस्था आपको देखनी होगी।

मैं ज्यादा कुछ न कहकर इस संकल्प पर बल देते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं। मैं माननीय मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि ओमप्रकाश जी जो संकल्प लाए हैं, उसको वह पूरा करें। हुक्मदेव जी को विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहूंगा कि उन्होंने श्री राम मनोहर लोहिया से लेकर तमाम महापुरुषों के नाम लिए । यह बहुत

अच्छा लगता है और इससे सीख मिलती है।

श्री विजय बहादुर सिंह (हमीरपुर, उ.पू.): सभापति महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे श्री ओमप्रकाश जी के संकल्प पर बोलने का अवसर दिया।

महोदय, मैं ज़रा हट कर बात करना चाहता हूं। आज पूरे विश्व में केवल ओद्योगीकीकरण की ही लड़ाई नहीं है। अपितु विश्व में वही लीड करेगा, जिसके पास नॉलेज है। इतिहास साक्षी है कि सबसे पहले भारतवर्ष ही ऐसा देश था, जहां संसार का पहला विश्वविद्यालय खुला। विवेकानंद जी ने अपने एड्रेस में भी कहा था कि नालंदा और तक्षशिला में विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी। उस समय हम वर्ल्ड में नंबर वन थे। चाहे व्याकरण, मैथमैटिक्स या ज्योतिष विद्या हो, हमारा देश पूरे वर्ल्ड में लीड करता था। मैं इसकी बात इसलिए करना चाहता हूं कि अगर च्वायस है तो फैक्ट्री खोली जाए, सुगर फैक्ट्री खोली जाए, कार बनाने का कारखाना खोला जाए तो यह जो विकास है, यह बड़ा क्षणिक है। अगर हम विद्या के मंदिर और स्थल खोलें तो उसकी जो प्रगति होगी, वह बहुत स्थायी होगी। मैं इसका उदाहरण बता रहा हूं। महोदय, मैं इलाहाबाद उच्च न्यायालय में वकालत करता था। मैं बाद में राजनीति में आया। इलाहाबाद में इलाहाबाद विश्वविद्यालय है। इलाहाबाद ही वह शहर था जिसने छः-छः प्रधानमंत्री दिए। अगर आप देख लें तो पंडित जवाहर लाल नेहरू से लेकर स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गांधी जी, राजीव गांधी जी, विश्वनाथ प्रताप सिंह जी, लाल बहादुर शास्त्री जी, और चन्द्र शेखर जी भारत के प्रधानमंत्री हुए। अगर कैबिनेट सेक्रेटरी को देखा जाए तो जिस होस्टल में मैं रहता था, उसमें दो लोग तो हमारे सीनियर ही थे। उनमें एक थे श्री सुरेन्द्र सिंह, और दूसरे श्री बी. के. चतुर्वेदी।

महोदय, जैसा कि अभी हमारे भाई शैलेन्द्र कुमार ने बताया कि वर्ष 1965-1970 तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय हिन्दुस्तान का ऑक्सफोर्ड माना जाता था। मुझे याद है जब मैं बी.ए. में पढ़ता था तो प्रोफेसर ईश्वरी प्रसाद जी इतिहास पढ़ाते थे, जब फ्रेंच रिवॉल्यूशन पढ़ाते थे तो विज्ञान विभाग के विद्यार्थी भी उनके लेक्चर को बाहर से सुनते थे। उनके अपने क्लास के लड़कों की संख्या मात्र 50 थी और 250 विद्यार्थी उनके लेक्चर को अलग से सुनते थे। उसी ज्ञान से हम बढ़े।

महोदय, माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री जी ने एक दिन कहा था कि हमें 1500 विश्वविद्यालयों की जरूरत है। जैसा अभी बताया गया कि जम्मू-कश्मीर को मिलाकर कुल 44 केन्द्रीय विश्वविद्यालय है और करीब 285, जिसकी संख्या घट-बढ़ सकती है, राज्य विश्वविद्यालय हैं। इसकी कुल संख्या 289 है। यह बहुत कम ही है।

हमारे माननीय सदस्य श्री ओम प्रकाश यादव जी जो संकल्प लाए हैं कि मोतीहारी में एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय खुले, मैं इसकी पुरज़ोर सिफारिश करता हूं। साथ में, मैं यह भी कहता हूं कि जहां से मैं सांसद हूं, वह उत्तर प्रदेश का सबसे पिछड़ा इलाका है। बुंदेलखण्ड में हमीरपुर, महोबा, बांदा, जालौन, ललितपुर जिले हैं। इसमें झांसी भी है। बगल में मध्य प्रदेश का हिस्सा - पन्ना, छतरपुर, टीकमगढ़, खजुराहो है। अगर देखा जाए तो इसकी आबादी बहुत ज्यादा है और वहां 100-100 किलोमीटर तक कहीं कोई विश्वविद्यालय नहीं है। जब हम अपने संसदीय क्षेत्र में जाते हैं तो वहां खासकर छात्राएं हमसे कहती हैं कि हमने हाई स्कूल पढ़ लिया, अब हम कहां जाएं? अगर उन्हें पढ़ने के लिए इलाहाबाद भेजते हैं तो उन्हें कमरा लेना पड़ता है, उनके पैरेंट्स को शिफ्ट करना पड़ता है और वे लोग इतने गरीब होते हैं कि ये कर नहीं पाते। इसका नतीजा होता है कि उन छात्राओं की पढ़ाई हाई स्कूल पर आकर ही खत्म हो जाती है।

महोदय, मैं आपको अपने गांव के बारे में बताऊं। हमीरपुर जिले में एक राठ कस्बा है। वहां स्वामी ब्रह्मानंद विद्यालय है। शायद स्वामी ब्रह्मानंद सन् 1954-55 में यहां मेम्बर ऑफ पार्लियामेंट भी थे। उस कृषि महाविद्यालय को वहां के किसानों ने एक हजार एकड़ जमीन डोनेट करके दी। God has been so kind to Hamirpur, Mahoba area. वहां कम से कम सैंकड़ों पहाड़ हैं और वहां सात नदियां बहती हैं। वहां पहाड़ों के बीच में ऐसा शीतल वातावरण है कि वह नॉन एयरकंडीशन्ड कैपिटल हो सकता है। मैं यह कहना चाहता हूं कि अगर एक विश्वविद्यालय हमीरपुर या महोबा में खोल दिया जाए तो अच्छा रहेगा।

महोदय, आज बात हो रही थी कि गांवों में डॉक्टर नहीं जा रहे हैं। इसका मुख्य कारण है कि अगर कोई लड़का ऑल इंडिया इंस्टीच्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, दिल्ली में पढ़ेगा, चंडीगढ़ में पढ़ेगा, और सात-आठ साल शहर के वातावरण में रहता है तो वह गांवों में नहीं जाएगा। लेकिन अगर विश्वविद्यालय के साथ-साथ मेडिकल कॉलेज भी होंगे तो अच्छा रहेगा। अलीगढ़ में मेडिकल कॉलेज है। बनारस विश्वविद्यालय में भी मेडिकल कॉलेज है। अगर बुंदेलखण्ड में विश्वविद्यालय के साथ-साथ कृषि महाविद्यालय और मेडिकल कॉलेज भी खुलेंगे और उस क्षेत्र के लड़के वहां पढ़ेंगे तो वे वहां पर जमेंगे। अगर उससे बुद्धि वाले लड़के, पढ़ने वाले लड़के आगे आएंगे तो यह विकास बहुत स्थाई होगा और यह जी.डी.पी. पर डिपेंड नहीं करेगा। क्योंकि, मैं जानता हूं कि एक परिवार से एक आदमी अगर पढ़-लिख जाता है तो हमेशा, परमानेंट उस परिवार की प्रगति होती है। मैं आपको यह बताना चाहता हूं।...(<u>व्यवधान</u>) हुक्मदेव नारायण यादव जी बहुत अनुभवी हैं, मैं इनसे पूरी तरह से इत्तेफाक और एग्री करता हूं तो उसमें फिर Domination of wisdom; domination of intelligence होगा। एक छोटा सा देश इजरायल है, लेकिन जब से उसे ड्रोन बना दिया तो पूरा संसार, सिर्फ नोलिज के कारण पूरा वर्ल्ड उससे घबरा रहा है, तो ऐसी अगर प्रतिभा है तो वहां विकास होगा।

अभी दो साल पहले मैं जापान गया था तो टोकियो यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर से मेरी बात हुई। कितनी स्टडी वे लोग करते हैं, आपको मैं बताना चाहता हूं, उन्होंने कहा कि आपके जो आई.टी. हब बैंगलौर वगैरह हैं, ये धीरे-धीरे घटेंगे, क्योंकि, इतना ज्यादा वहां डैवलपमेंट हो गया है कि लोग-बाग इन्वोल्व नहीं होंगे तो आपको गांवों और ऐसे एरियाज़ में शिफ्ट करना पड़ेगा, जहां वह वातावरण हो। अब आपसे मैं बता दूं कि बुन्देलखण्ड में हमारी कांस्टीट्वेंसी भी 150 किलोमीटर में दौड़ी और 400 किलोमीटर के पश्चात सिर्फ झांसी में एक विश्वविद्यालय है, जो बहुत पुराना है। वरना कहीं भी कोई एजुकेशन है ही नहीं, डिग्री कालेज ही नहीं है। नतीजा यह हुआ कि वे वहां डेली वेजिज़ हो रहे हैं और हमारे यहां के वर्कर्स के बल पर दिल्ली और हरियाणा की तरक्की हो रही है।

मैं अपनी बात समाप्त करने के लिए यह कह रहा हूं कि आजकल सबसे बड़ी दिक्कत जमीन उपलब्ध कराने की होती है, चाहे इंडस्ट्री हो, लेकिन अगर आप सैण्ट्रल यूनिवर्सिटी खोलते हैं तो जितनी जमीन चाहिए तो जब मैं आपसे बता रहा हूं कि एग्रीकल्चर कालेज में हमीरपुर के एक कस्बे में एक हजार एकड़ से ज्यादा जमीन एवेलेबल है। अगर आप कहें तो एक हफ्ते के अन्दर 50 एकड़, 25 एकड़, 100 एकड़ जमीन वहां उपलब्ध हो सकती है। अगर यह जमीन उपलब्ध हो जाये तो मैं श्री ओमप्रकाश यादव जी की बात का जोरदार समर्थन करते हुए उनकी बात के साथ अटैचमेंट, सम्बद्ध करना चाहता हूं कि इसी तरह जोरदार मैं चाहता हूं कि बुन्देलखण्ड में भी इन जिलों में कहीं पर यूनिवर्सिटी खोली जाये, जहां पर इलैक्ट्रोनिक पढ़ाई जाये, वहां आई.टी. एजुकेशन दी जाये, मैडीकल कालेज खोला जाये, एग्रीकल्चर कालेज खोला जाये, उससे एक परमानेंट बुद्धि का विकास होगा और उससे वहां तरक्की होगी।

आपको धन्यवाद कि आपने मुझे इस पर बोलने का मौका दिया।

श्रीमती मीना सिंह (आरा): सभापति महोदय, श्री ओमप्रकाश यादव जी ने मोतिहारी में नया केन्द्रीय विश्वविद्यालय खोलने के सम्बन्ध में जो संकल्प प्रस्तुत किया है, मैं उसका समर्थन करने के लिए खड़ी हुई हूं, जिसका अधीर रंजन चौधरी जी, हुक्मदेव नारायण यादव जी, विजय बहादुर सिंह जी और शैलेन्द्र जी ने भी समर्थन किया है।

आज बिहार में सर्वाधिक चर्चा का विषय है कि केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी में बने, जब कि मानव संसाधन विकास मंत्री यह चाहते हैं कि यह विश्वविद्यालय गया में बने। मैं गया का विरोध नहीं करती हूं, वह स्थान है, जहां महात्मा बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में श्रद्धालु उस स्थान पर दर्शन के लिए और नमन करने के लिए आते हैं, जहां भगवान बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। पटना के बाद गया एकमात्र स्थान है, जहां अन्तर्राष्ट्रीय विमान सेवा प्रदान की जाती है। पटना विश्वविद्यालय बिहार का सबसे पहला विश्वविद्यालय है, वह भी मगध क्षेत्र में स्थित है। इस प्रकार बिहार का मगध क्षेत्र शिक्षा के क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। इसके विपरीत बिहार का भोजपुर क्षेत्र है, यह क्षेत्र बहुत ही पिछड़ा हुआ है। भोजपुर लगभग 2500 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। यहां की आबादी लगभग 25 लाख है। इस क्षेत्र में साक्षरता 60 प्रतिशत के आसपास है। इस क्षेत्र की मुख्य भाषा भोजपुरी है। अभी सदन में कल ही भोजपुरी भाषा को संविधान की 8वीं अनुसूची के डालने के ऊपर ध्यानाकर्षण प्रस्ताव पर चर्चा हुई थी, जिसमें सभी सदस्यों ने इस भाषा का समर्थन किया था। मैं भी उसी क्षेत्र से आती हूं। मैं सारे सदस्यों को उसके समर्थन के लिए धन्यवाद देती हूं और उम्मीद करती हूं कि भोजपुरी को यथाशीघ्र संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल किया जाये।

शिक्षा की दृष्टि से भोजपुर क्षेत्र अत्यंत पिछड़ा हुआ है। इस क्षेत्र में लोग बड़ी संख्या में पटना और दिल्ली आते हैं। यही स्थिति राज्य के चंपारण क्षेत्र की भी है। यह क्षेत्र भी शिक्षा के क्षेत्र में काफी पिछड़ा हुआ है। केंद्रीय विश्वविद्यालय की बात तो दूर, इस क्षेत्र में 200 वर्ग किलोमीटर के दायरे में विश्वविद्यालय भी नहीं है। यह इस क्षेत्र से 250 किलोमीटर दूर है।

आप सभी जानते हैं कि चंपारण राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की कर्मभूमि रही है। लेकिन यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि आज यह भूमि अशिक्षा के अंधकार में डूबी हुई है। मोतिहारी में केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना करना राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। बिहार की जनभावना भी यही है और लोकतांत्रिक रूप से चुनी गयी और लोकप्रिय राज्य सरकार की भी यही भावना है।

सभापति महोदय, माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री कपिल सिब्बल जी और केंद्र सरकार से यह मांग करती हूं कि बिहार की जनभावना का सम्मान करते हुए इस वाद-विवाद को समाप्त करें और मोतिहारी में केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना करने का मार्ग प्रशस्त करें। इन्हीं शब्दों के साथ मैं फिर से एक बार आपको धन्यवाद देती हूं।

श्री महाबल मिश्रा (पश्चिम दिल्ली): सभापति महोदय, मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे बोलने का समय दिया। श्री ओम प्रकाश यादव द्वारा जो संकल्प बिहार के मोतिहारी में एक केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना का जो प्रस्ताव लाया गया है, मैं उसका पुरजोर समर्थन करता हूं। आज हुक्मदेव बाबू को मैंने उद्धार व्यक्त करते हुए सुना और पार्टी लाइन से उठकर महात्मा गांधी के नाम पर आज उन्होंने इस कॉलेज की स्थापना की बात कही। मैं समझता हूं कि पार्टी लाइन से उठकर यह आपका दार्शनिक भाषण था, इसमें दो मत नहीं है। राजनीतिक, दार्शनिक, धार्मिक और सबसे उच्च कोटि के विचार आपने व्यक्त किए। तमाम राजनेता, महापुरूषों के आपने नाम लिए, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

जहां तक विश्वविद्यालय की बात है, 44 केंद्रीय विश्वविद्यालय हैं। बिहार की जहां तक बात करूं, तो आपने देखा होगा कि दिल्ली में जितने भी कॉलेजेज हैं, आज बिहार के छात्र में क्षमता है, बिहार के छात्र अपनी रोजी-रोटी के लिए नहीं, बल्कि खेत-खलिहान को बेचकर भी पढ़ाई में भाग लेने के लिए आते हैं, आप जितनी यूनिवर्सिटीज में देख लें, वहां टॉपर स्थान बिहार के छात्र-छात्राओं का है। दिल्ली यूनिवर्सिटी में, केवल दिल्ली में ही नहीं, चाहे बंगलौर हो, चाहे कर्नाटक हो, जहां भी पढ़ाई के दृष्टिकोण से उनको जगह मिलती है, वे जाकर अपना नामांकन करते हैं। देश में आईएएस, आईपीएस और उच्च कोटि की नौकरियों में देखें या एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस में प्रथम स्थान बिहार के छात्रों का आता है। बिहार में राजनीतिक दृष्टिकोण से आज कॉलेजेज में आज पढ़ाई उस तरह की नहीं रही, जिसकी वजह से वहां से छात्र-छात्राओं ने पलायन किया। मैं आपसे निवेदन करता हूं कि जिस चंपारण भूमि पर महात्मा गांधी ने नमक सत्याग्रह किया, उस भूमि पर विश्वविद्यालय बनाने की बात पर मैं समझता हूं कि केंद्रीय सरकार के मंत्री को अविलंब घोषणा करनी चाहिए। इसमें कोई देर नहीं करनी चाहिए। उन्हें ऐलान कर देना चाहिए कि हम अमूक डेट से उसे हम खोलने जा रहे हैं। जिस भूमि पर गुरू गोविन्द सिंह पटना में पैदा हुए। भगवान महावीर वैशाली में पैदा हुए, वहां गौतम बुद्ध हुए, यह महान पुरूषों और संतों की नगरी है। जहां तक गया कि बात है तो एक यूनिवर्सिटी से काम नहीं चलेगा। बिहार के छात्र-छात्राओं के लिए प्रत्येक जिले में अच्छे स्कूल्स हों, अच्छे यूनिवर्सिटीज हों। वहां इनकी आवश्यकता है। क्योंकि वहां कोई औद्योगिक क्षेत्र नहीं है। औद्योगिक क्षेत्र नहीं होने कारण वहां के छात्र-छात्राएं सिर्फ नौकरी पाने के लिए, डाक्टर, सीए, आईएएस, आईपीएस बनने के लिए तैयारी करते हैं। आपने देखा भी है। मैं उसका पुरजोर समर्थन करता हूं।

दिल्ली में वर्ष 1920 में जामिया यूनिवर्सिटी बनी। वर्ष 1922 में दिल्ली यूनिवर्सिटी की स्थापना हुई। 1960 के दशक में स्वर्गीय इंदिरा गांधी के समय में जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी बनी। उस समय दिल्ली की जनसंख्या बहुत कम थी। आज दिल्ली में हिन्दुस्तान के कोने-कोने से छात्र आते हैं। दिल्ली औद्योगिक क्षेत्र होने के नाते, कॉमर्शियल स्टेट होने के नाते, लोग सर्विस करने के लिए यहां आए। दिल्ली में 1980 में टोटल 35 लाख मतदाता थे आज एक करोड़ चालीस लाख मतदाता हैं। यहां माइग्रेशन और छात्र-छात्राओं का माइग्रेशन दिल्ली पर बहुत बड़ा प्रेशर है। दिल्ली के छात्र-छात्राओं का एडमिशन नहीं होता है। आप यूनिवर्सिटी में देखेंगे कि जिस छात्र को 90 परसेंट से कम नम्बर होता है उनका एडमिशन नहीं होता है क्योंकि कॉलेजेज की कमी है, सीट की कमी है। इस कमी की वजह से छात्र-छात्रओं का नामांकन नहीं हो पाता है। हमने पिछले साल देखा था कि जिस छात्र ने 90 प्रतिशत अंक लिए उस छात्र का एडमिशन हुआ। कॉलेजेज और यूनिवर्सिटी की कमी होने की वजह से आज नामांकन नहीं होता है। दिल्ली में चाहे नार्थ ईस्ट स्टेट हो या अन्य राज्य हों, बिहार, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, चेन्नई हो या विदेश हों वहां से छात्र-छात्राएं पढ़ने के लिए आते हैं। क्योंकि दिल्ली का क्वालिटी ऑफ एजुकेशन बहुत अच्छा है। इस मामले में जब राष्ट्रपति ओबामा आए थे तो उन्होंने भी यहां के एजुकेशन का लोहा माना था।

आज मैं आप से निवेदन करता हूं कि दिल्ली में जिस तरह जनसंख्या बढ़ रही है, आज दिल्ली सरकार को बधाई देना चाहता हूं कि दिल्ली सरकार ने आईटी

यूनिवर्सिटी, गुरूगोविन्द सिंह यूनिवर्सिटी खोली जिससे टेक्निकल की पढ़ाई कर स्टुडेंट्स बाहर आएं लेकिन केन्द्रीय विश्वविद्यालय का अभाव है। मैं आप से मांग करता हूं कि दिल्ली में, नजफगढ़ में, मेरा क्षेत्र जो द्वारका है उसमें दो हजार एकड़ ग्राम सभा की जमीन है। दिल्ली में जमीन की कमी नहीं है। आज यूनिवर्सिटी खोलने की आवश्यकता है। सेन्ट्रल एजुकेशन के लिए सेन्ट्रल यूनिवर्सिटी खोलने की आवश्यकता है। आज दिल्ली के छात्र-छात्राएं ओपन यूनिवर्सिटी में एडमिशन लेते हैं। जो अस्सी प्रतिशत अंक से पास करता है वह ओपन यूनिवर्सिटी में एडमिशन लेता है। इस देश में क्वालिटी एजुकेशन के लिए यह विडंबना है।

मैं आपसे निवेदन करता हूं कि आज 44 केन्द्रीय विश्वविद्यालय है, लगभग ढ़ाई सौ राज्य विश्वविद्यालय हैं। इतने बड़े कंट्री में सिर्फ 44 सेन्ट्रल विश्वविद्यालय हैं। यह बड़ी ताज्जुब की बात है। हमारे राज्य मंत्री अभी बैठे हैं। केन्द्रीय मंत्री जी तो नहीं हैं। केन्द्रीय मंत्री जी बहुत सारी पॉलिसी लाते हैं लेकिन एजुकेशन के इतिहास में कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं किय हैं। दसवीं की परीक्षा में भी बैरियर खत्म कर दिया। इससे क्वालीटी ऑफ एजुकेशन का नुकसान हो रहा है। मैं उनसे भी इस बारे में बात कर रहा हूं। क्वालिटी एजुकेशन की बात खत्म हो रही है।

मैं आप से मांग करता हूं कि आपने जो बैरियर खत्म कर दिया है उससे देहात के छात्र-छात्राओं ने पढ़ना बंद कर दिया है। दसवीं की परीक्षा एक बैरियर था जिसके कारण लोग पढ़ते थे। लेकिन वह बैरियर खत्म होने से पढ़ाई-लिखाई भी चौपट हो रही है ...(व्यवधान)

17.00 hrs.

अगर मैं यूनिवर्सिटी की बात करूं, मैं निवेदन करता हूं कि देश के हरेक राज्य में दो-दो, तीन-तीन सैंट्रल विश्वविद्यालय खोलें। दिल्ली में हर राज्य से माइग्रेट होकर जनसंख्या आती है। एक साल में जनसंख्या कुछ है तो अगले साल कुछ बढ़ जाती है। उसके अनुसार तीन यून्वर्सिटी से काम नहीं चलेगा। इसलिए तीन विश्वविद्यालय, नजफगढ़ में हजारों एकड़ जमीन है, द्वारका सब सिटी अच्छा बसा है, आप वहां यूनिवर्सिटी खोलें जिससे दिल्ली और विभिन्न राज्यों से आए हुए छात्र-छात्राओं को तकलीफ न हो।

मैं श्री ओम प्रकाश यादव के प्रस्ताव का पुरजोर समर्थन करता हूं। लेकिन दिल्ली में जिस तरह जनसंख्या बढ़ती जा रही है, मैं निवेदन करता हूं कि आप केन्द्र सरकार को निर्देशित करें कि दिल्ली में जनसंख्या के आधार पर तीन और सैंट्रल विश्वविद्यालय खोले जाएं। साथ ही श्री ओम प्रकाश की मांग का पुरजोर समर्थन करते हुए कहना चाहता हूं कि गया में भी विश्वविद्यालय खोलें। हुक्मदेव जी, आपको दुबारा बहुत-बहुत बधाई।

MR. CHAIRMAN : Hon. Members, I have to inform the House that we had to allot the time for discussion on this on-going Private Members' Resolution before the discussion commenced on it. If the House agrees, we may allot two hours for discussion on the Resolution moved by Shri Om Prakash Yadav.

SEVERAL HON. MEMBERS: Yes.

MR. CHAIRMAN: Dr. Bhola Singh.

डॉ. भोला सिंह (नवादा): सभापति महोदय, श्री ओम प्रकाश यादव ने मोतिहारी में केन्द्रीय विश्वविद्यालय खोलने के लिए सदन में जो प्रस्ताव दिया है, मैं उसके समर्थन में बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं।

17.02 hrs.

(Shrimati Sumitra Mahajan *in the Chair*)

बिहार भारत की एक सांस्कृतिक आत्मा है। बिहार भारत का भौतिक शरीर भी है। बिहार समस्याओं का नहीं संभावनाओं का राज्य है और मैं आज इस सदन में इस विचार को रखना चाहता हूं। बिहार का दुर्भाग्य है कि उसके एक सौ वर्ष के जीवन काल में न जाने उसके शरीर के कितने भाग काटे गए। उड़ीसा उससे अलग हुआ, बंगाल से वह अलग हुआ और अभी हाल में झारखंड जो बिहार का हिस्सा था, उसे काटकर एक झारखंड राज्य की स्थापना हुई। 46 प्रतिशत भूभाग झारखंड में चला गया। जंगल चले गए, खान चले गए, खदान चले गए और जो बिहार बचा, वह बिहार का अर्ध शरीर है, जहां 54 प्रतिशत भूभाग है, 10 करोड़ आबादी है। जब बिहार का बंटवारा हो रहा था, तो भारत सरकार ने कहा था कि खदान के जाने से, कारखाने के जाने से, उद्योग के जाने से, जंगल, बिजली के जाने से बिहार की जो क्षति हो रही है, बिहार जो प्रताड़ित होगा, केन्द्र सरकार उसकी भरपाई करेगी। पर दुर्भाग्य है कि बिहार आज केन्द्र के व्यवहार से दुखी है, प्रताड़ित है और बिहार के साथ केन्द्रीय विश्वविद्यालय के बनाने के नाम पर आज जो खेल खेला जा रहा है, वह कोई नया नहीं है।

मुझे याद है जब बिहार के मुख्य मंत्री डा. श्री कृष्ण सिंह हुआ करते थे तब पंडित जवाहर लाल नेहरू हिन्दुस्तान के प्रधान मंत्री थे। बिहार केसरी बिहार में तेल शोधक कारखाना खोलना चाहते थे। उन्होंने पंडित जी से कहा। पंडित जी ने बिहार केसरी को पत्र लिखा जिसमें कहा कि बिहार केसरी, बिहार के बरौनी में तेल शोधक कारखाना नहीं खोला जा सकता। हमारे इंजीनियर ने कहा है कि बरौनी की जमीन नीची है और उस जमीन पर गंगा की बाढ़ का हमेशा खतरा है, इसलिए रिफाइनरी नहीं हो सकती। बिहार केसरी ने पंडित जवाहर लाल नेहरू जी को पत्र लिखा और कहा कि पंडित जी, अब मुझे लगता है कि हमें पार्लियामैंट आना पड़ेगा। उसके दूसरे ही दिन पंडित जवाहर लाल नेहरू जी ने बिहार केसरी को सूचना दी कि बरौनी में तेल शोधक कारखाना खोलने के लिए सरकार ने मंजूरी दे दी है। यह जो नियम और प्रक्रियाएं हैं, जो सारी बातें की जा रही हैं, यह सब राजनीति का खेल है।

महोदया, मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि उत्तर में हिमालय है, दक्षिण में गंगा नदी है, पूर्व में कोसी नदी है और पश्चिम में सरयू नदी है। यह हिस्सा मिथिला का हिस्सा है। जब राम और सीता का स्वयंबर हुआ और उसके बाद जब सीता अयोध्या जाने लगी, तो राजा दशरथ ने अपने पहलवानों से कहा कि सीता की पालकी को

उठाओ। जब पहलवान उठाने गये, तो पालकी नहीं उठी। उन्होंने फिर और पहलवानों को भेजा, लेकिन पालकी नहीं उठी। राम ने सीता से कहा, जानकी क्या बात है, क्यों ऐसा हो रहा है? सीता ने कहा -- प्रभु, राजा जनक ने मुझे बेटी की तरह पाला-पोसा है। मैंने सोचा था कि मिथिला को कुछ देकर जाऊं, लेकिन मैं जा रही हूं, लौट कर नहीं आऊंगी, आज मुझे इसी बात का अफसोस है। अगर आप कहें, तो मैं कुछ कहूं। राम ने कहा -- कहो। सीता ने कहा -- मेरे प्रभु, मिथिला की जमीन को जो स्पर्श करे, उसे स्वर्ग की प्राप्ति हो।

सभापति महोदया, मैं इस बात को इसलिए कहना चाहता हूं कि जब महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से आये तो गोखले जी से मिले और उनसे कहा कि हम भारत में अंग्रेजों की गुलामी के खिलाफ आंदोलन करना चाहते हैं, तो गोखले जी ने गांधी जी से कहा कि क्या आपने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया है? गांधी जी ने कहा कि नहीं। उन्होंने कहा कि आप पहले भारत का भ्रमण करें और उसके बाद यदि आपको लगता है कि ब्रिटिश शासन काल के खिलाफ आंदोलन होना चाहिए, तो हम आपके साथ हैं। मोहन दास करमचंद गाधी जी भारत के हिस्सों में घूमते हुए चम्पारण, मोतिहारी पहुंचे।

महोदया, जो व्यक्ति पहले सामान्य था, बैरिस्टर था, जिसका नाम मोहनदास करमचंद गांधी था, उस मिट्टी ने मोहनदास करमचंद गांधी जी को महात्मा के रूप में उप-स्थापित कर दिया। यह पारस मिट्टी है, जो लोहे को भी सोना बना देती है। मैं इस बात को इसलिए कहना चाहता हूं कि जब मां विवादित हो जाये, क्या मां विवादित हो सकती है? शिक्षा मां है, चाहे वह कश्मीर की हो, इंग्लैंड की हो, जापान की हो या पाकिस्तान की हो, सभी मातायें, अपनी मां हैं। मां का दर्जा कोई विवादित दर्जा नहीं है और मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि आज इस मोतिहारी केन्द्रीय विश्वविद्यालय को विवादित बनाया जा रहा है। क्या यह बात सही नहीं है? मैं केन्द्रीय सरकार से जानना चाहता हूं कि क्या यह बात सही नहीं है कि प्रारंभ में बिहार सरकार से बातचीत करके मोतिहारी में केन्द्रीय विश्वविद्यालय की सहमति केन्द्रीय सरकार के मानव संसाधन विभाग ने दी? क्या यह बात सही नहीं है कि पटना में मोतिहारी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के नाम पर किराए के मकान में विश्वविद्यालय खोला गया? क्या यह बात सही नहीं है कि उसी के नाम पर विश्वविद्यालय खोला गया? महोदया, मैं बड़ी विनम्रता के साथ आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि मोतिहारी ने नहीं कहा बिहार के मुख्यमंत्री को कि हमारे यहां विश्वविद्यालय चाहिए। चम्पारण ने नहीं कहा, मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार ने, जो बिहार की स्थिति है, उस स्थिति को सामंजस्य करने के लिए, विकास में संतुलन स्थापित करने लिए, चूंकि ललित नारायण विश्वविद्यालय दरभंगा में है, मधेपुरा में मंडल विश्वविद्यालय है, भागलपुर में विश्वविद्यालय है, गया में विश्वविद्यालय है, आरा में विश्वविद्यालय है, छपरा में विश्वविद्यालय है, ये सारे विश्वविद्यालय हैं, लेकिन मोतिहारी का उतना बड़ा हिस्सा विकास की तमाम योजनाओं से अलग है, अपनी पहल पर 250 एकड़ जमीन एक्वायर करके मुफ्त में दिया जिससे विश्वविद्यालय खुले। किराए के मकान में विश्वविद्यालय चला, लेकिन जब उसे वहां ट्रांसफर करने का सवाल उठा, तब यह बात होने लगी। क्या यह विश्वविद्यालय खोलने की बात है? बिहार में सात-आठ अन्य केंद्रीय विश्वविद्यालय खोलने की आवश्यकता है। इसलिए मैं आपके माध्यम से भारत सरकार से कहना चाहता हूं कि जिस तरह से राजा जनक ने याज्ञवल्क्य से पूछा कि हे ऋषि, हे महात्मा, हम कैसे देखते हैं? याज्ञवल्क्य ने कहा, हे राजन्, हम सूरज से देखते हैं। राजा जनक ने पूछा कि अगर सूरज न हो, तब कैसे देखेंगे? याज्ञवल्क्य ने कहा, तब हम चांद की रोशनी से देखेंगे।

सभापति महोदया : आपको कितना समय और चाहिए?

डॉ. भोला सिंह : महोदया, मैं केवल पांच मिनट में अपनी बात समाप्त करूंगा।

महोदया, फिर राजा जनक ने पूछा कि अगर चांद भी न हो, अगर अंधेरी रात हो, अमावस्या की रात हो, तब कैसे देखेंगे? याज्ञवल्क्य ने कहा, हे राजन्, तब हम उस अंधेरी रात में पुकारेंगे - श्याम। श्याम जहां होगा, वह बोलेगा कि मैं यहां हूं। इस तरह से देखेंगे। फिर राजा जनक ने पूछा, हे महर्षि, अगर यह स्थिति भी नहीं हो, तब कैसे देखेंगे? फिर याज्ञवल्क्य ने कहा, हे राजन्, तब हम अपनी आत्मा के दीप को जलाएंगे। आत्मदीप जलाएंगे। आज मोतिहारी में जो केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना का प्रश्न है, उसे विवादित बनाया जा रहा है। वह प्रश्न तो स्वीकृत हो चुका था, सहमति हो चुकी थी और आज गया का नाम लिया जा रहा है। विश्व की तमाम आत्माएं गया में निवास करती हैं। गया में विश्वविद्यालय है, गया में केंद्रीय विश्वविद्यालय बने, कहां विरोध है? बिहार ज्ञान की भूमि है। इसलिए, महोदया, मैं एक कहानी कहकर अपनी बात समाप्त करना चाहता हूं। सरस्वती जी से किसी ने पूछा कि आप हमेशा वीणा बजाया करती हैं, इसका क्या कारण है? सरस्वती जी ने कहा कि मैं विष्णु की पत्नी हूं, पर विष्णु को लोग सरस्वतीपति नहीं मानते, लक्ष्मीपति मानते हैं। विष्णु ने मुझे कंठ में जगह दी, उस दर्द को भी मैं सह गयी, लेकिन जब मैं देखती हूं अपने पुत्रों को धनी पुत्रों के पीछे भागते हुए, तो मुझे बड़ा कष्ट होता है, पीड़ा होती है और उसी को भूलने के लिए हमेशा वीणा पर मेरे हाथ होते हैं। मैं आज भारत सरकार से कहना चाहता हूं कि जिस पार्टी की सरकार है, वह पार्टी 127 वर्ष की है। पंडित जवाहर लाल नेहरू जी के जमाने तक वह पार्टी पार्टी नहीं एक आंदोलन के रूप में रही और सम्पूर्ण ने उसके प्रति एक श्रद्धा ज्ञापित की। आज उसकी बहुत बड़ी जिम्मेदारी है कि बिहार, जिसने सारे देश को सांस्कृतिक आत्माएं दी हैं। बिहार, जिसने पूरे देश को, चाहे गुजरात हो, चाहे कर्नाटक हो, चाहे पंजाब हो या हरियाणा हो, कृषि क्रांति दी। बिहार की जो आज आकृति है, वह बिहार नहीं है, केन्द्र ने वह आकृति दी है, पिछड़ेपने की आकृति, हास्यास्पद स्थिति। बिहार में तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम साहब गए थे। वहां उन्होंने विधान मंडल को सम्बोधित करते हुए कहा था कि बिहार 2020 तक विकसित राज्य बनेगा। हमारे मुख्य मंत्री नीतीश कुमार जी ने उन्हें उसी समय कहा था कि वह अवश्य बनेगा। बिहार उभर रहा है, उठ रहा है, गतिशील है, बिहार के कण-कण में एक आवाज़ कौंध रही है। इस विकसित बिहार के प्रयास को हम आपके माध्यम से सरकार से आग्रह करना चाहते हैं कि शिक्षा मां है, संस्कृति मां है, बिहार सरकार कोई राजनैतिक आधारर पर नहीं, कोई क्षेत्रीयता के आधार पर नहीं, कोई पक्षपात के आधार पर नहीं,महात्मा गांधी, जिन्हें हम राष्ट्रपिता कहते हैं और शिक्षा हमारी मां है। क्या महात्मा गांधी विभाजित होंगे, क्या शिक्षा मां विभाजित होगी? इसलिए हम भारत सरकार के शिक्षा विभाग से आग्रह करना चाहते हैं कि वह हठवादिता छोड़े, हठधर्मिता छोड़े। बिहार, जिसका बहुत बड़ा ऋण केन्द्र पर है, राष्ट्र पर है, जो आत्मदीप है, प्रकाश स्तम्भ है, जो राष्ट्र की धरोहर है, जो राष्ट्र का हेरिटेज है, उस बिहार को, आप इस अवस्था में उसकी अस्मिता के साथ खिलवाड़ न करें।

श्री कपिल सिब्बल, जो विद्वान हैं, वकील हैं, हम उनसे कहना चाहते हैं कि अपने स्वभाव के अंतर्गत एक छोटा दिल बड़ा काम नहीं कर सकता, टूटे दिल से कोई आदमी खरा नहीं हो सकता है, हम चाहते हैं कि केन्द्र इस पर विचार करे। जो उसका तत्कालीन निर्णय था, उसे कार्यान्वित करे। बिहार के साथ उसका व्यवहार समानीकरण का हो, समानता का हो, सदाशयता का हो। इन्हीं शब्दों के साथ ओम प्रकाश जी ने जो यहां संकल्प पेश किया है, मैं उसका समर्थन करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्री जगदानंद सिंह (बक्सर): सभापति महोदया, श्री ओम प्रकाश का जो संकल्प यहां चर्चा के लिए आया है कि बिहार में केन्द्रीय विश्वविद्यालय खोला जाए, मैं

उसका पुरजोर समर्थन करता हूं। मैं काफी समय से सदन में बैठा हुआ माननीय सदस्यों के विचारों को सुन रहा हूं। सबके द्वारा भारत सरकार से आग्रह किया जा रहा है कि वह वहां केन्द्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना करे।

महोदया, यह आग्रह तब हो रहा है जब भारत सरकार ने स्वयं निर्णय लिया है कि इस देश में आठ केन्द्रीय विश्वविद्यालय खुलेंगे और उनमें से एक बिहार में भी खुलेगा। मैं भारत सरकार को, भारत सरकार के शिक्षा मंत्री सिब्बल साहब को और शिक्षा राज्य मंत्री श्रीमती पुंदेश्वरी जी को धन्यवाद देता हूं। आपने कोई यह असाधारण निर्णय नहीं लिया है, यह बरसों से बिहार की मांग थी। हमारी मांग थी कि पटना विश्वविद्यालय को केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा दिया जाए।

स्वर्गीय कर्पूरी ठाकुर और समाजवादी आंदोलन के सभी नेता, जिनमें से एक हुक्मदेव नारायण जी यहां बैठे हैं, मैं उनकी बात सुन रहा था, सबकी यही मांग थी कि केन्द्रीय विश्वविद्यालय बिहार में खुले. श्री लालू प्रसाद की बिहार में 15 साल तक सरकार रही। उनकी सरकार के प्रतिनिधिमंडल लगातार भारत सरकार के सामने बात रखते आए थे कि वहां एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय खुले। जब हुक्मदेव नारायण जी मंत्री थे और अटल बिहारी वाजपेयी जी देश के प्रधान मंत्री थे। बिहार से राजनैतिक सभी दलों के लोग, सर्वदलीय प्रतिनिधि मंडल लेकर के हम आये थे कि बिहार को एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय चाहिए। हालांकि हमेशा हम लोगों की चर्चा होती थी। पटना विश्वविद्यालय जो देश का अपने समय का एक महत्वपूर्ण विश्वविद्यालय था, इसी विश्वविद्यालय को केन्द्रीय विश्वविद्यालय का दर्जा दिया जाए। कभी बिहार ने यह मांग नहीं की थी कि आप इस स्थान पर बनाओ। आज जो मैं देख रहा हूं कि वर्षों की हमारी पुरानी मांग, जब केन्द्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए निर्णय हो चुका है और भारत सरकार आगे बढ़ना चाहती है, तब हम स्वयं इस विषय को उलझा रहे हैं।

महोदया, जब 44 केन्द्रीय विश्वविद्यालय इस देश में हैं तो बिहार की हिस्सेदारी अपने भूगोल और जनसंख्या के आधार पर 4 विश्वविद्यालयों की बनती है। यदि हम इन विश्वविद्यालयों की संख्या को आधार मानें तो हमें और विश्वविद्यालय चाहिएं। आज प्रश्न क्या है कि बिहार को विश्वविद्यालय चाहिए या मोतीहारी और गया के नाम पर विश्वविद्यालय नहीं चाहिए। मैं सदन में इस बात को कहना चाहता हूं कि जब माननीय ओमप्रकाश जी का यह गैर-सरकारी संकल्प था, उसी के साथ एक मेरा गैर-सरकारी संकल्प था कि जो रीजनल इम्बैलेंस है इस देश में, उसे दूर किया जाए।

महोदय, रीजनल इम्बैलेंस हमारे इस ज्ञान के क्षेत्र में, शिक्षा के क्षेत्र में बिहार में है और हमारे बिहार में सबसे ज्यादा अनपढ़ लोग रहते हैं और वहां के विश्वविद्यालयों की स्थिति सही नहीं है। मैं आपके माध्यम से भारत सरकार से यह बात कहना चाहता हूं कि यह कोई एलीमेंट्री एजुकेशन का इंस्टीट्यूशन नहीं है। एलीमेंट्री एजुकेशन हमेशा एट ए डोर के कंसेप्ट पर चलती है और हमारे विश्वविद्यालय का मतलब दुनिया के लोग आकर पढ़ सकें, हम ऐसी संस्थाओं में दुनिया में कहीं भी जा सकें और दुनिया की सारी विधा जहां पढ़ाई जा रही हो, उसे विश्वविद्यालय कहते हैं। मोतिहारी और गया के विवाद में अगर यह विश्वविद्यालय रुकता है तो मुझे अफसोस है महोदय कि बिहार ने बहुत कुछ खोया है इन विवादों में। मुझे याद है कि तत्कालीन केन्द्रीय सरकार को एम्स का दर्जा देना था किसी एक अस्पताल को। हम सभी ने कहा था कि इंदिरा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान पटना में मौजूद है, आप लोग इसे एम्स का दर्जा दे दीजिए, लेकिन तत्कालीन सरकार ने कहा कि नहीं, हम एक दूसरा अस्पताल बनाएंगे, क्योंकि इसमें इंदिरा गांधी का नाम जुड़ा हुआ है। अगर हम उस विवाद में पड़े होते, तो वह अस्पताल रुक गया होता। हम लोगों ने तुंत निर्णय किया कि नहीं, हमें अस्पताल चाहिए, चाहे सरकार की कोई भी सोच हो। इंदिरा गांधी जी के नाम से कोई भी विरोध हो, लेकिन बिहार के लोगों को एक अच्छा अस्पताल चाहिए, उन्हें दिल्ली न जाना पड़े, उनका इलाज स्थानीय रूप में हो सके।

मैं कहना चाहता हूं कि क्या गांधी की कर्म-भूमि और बुद्ध की ज्ञान-भूमि की हम तुलना करेंगे कि कौन बड़ा है, कौन छोटा है? महोदया, बिहार के किसी भी स्थान की चर्चा करके हम उसकी बिहारी होने के नाते तारीफ करें तो हमें अच्छा लगता है। लेकिन बिहार के अन्य स्थानों को छोटा दिखाने के लिए किसी स्थान को बड़ा बताया जाए, मुझे लगता है कि यह अच्छी बात नहीं है। महात्मा बुद्ध की ज्ञान भूमि जिससे दुनिया प्रभावित हुई और हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के कर्तव्यों से आज देश आजाद है, हम क्यों तुलना करते हैं। मैं माननीय हुक्मदेव नारायण जी को सुन रहा था कि कैसे मिथिला की संस्कृति को कोई नकार नहीं सकता है। मगध और मगध के उस समय के इतिहास को नकारने की क्या कोई आवश्यकता है? आप जिस अशोक चिन्ह और धर्म-चक्र की बात करते हैं वह तो मगध से निकला था। क्या हम गंगा के इस पार या उस पार की चर्चा करके क्या हम बिहार के किसी एक हिस्से को छोटा बना सकते हैं।

महोदया, अयोध्या में श्रीराम राजकुमार थे। विश्वामित्र की तपोभूमि गंगा के किनारे बक्सर में, जहां से मैं यहां पर प्रतिनिधि बनकर आया हूं। अगर विश्वामित्र नहीं होते तो राम राजकुमार रहते, कभी भगवान राम नहीं बनते। मत भूलिए कि बिहार का हर कोना, हर अंश ज्ञान की ज्योति से जलता रहा है। मगध हो, मिथिला हो, शाहाबाद या भोजपुर हो, बिहार के हर हिस्से का इतिहास बिहार का इतिहास है। हमें बिहार के इतिहास को अलग-अलग नहीं बांटना चाहिए। जब बिहार का बंटवारा हो रहा था तब हमने बिहार की विधान सभा में कहा था कि बिहार को बांटने के लिए झारखंड को ऊंचा और बिहार को छोटा मत करो। झारखंड की सारी लड़ाइयां, चाहे संथालों की हो या बिहार के वीर कुंवर सिंह की हो, सब भारत को आजाद कराने के लिए थी। यह लड़ाई क्षेत्रीयता की नहीं थी। आज हम क्यों इस बात को कह रहे हैं?

महोदया, आज मगध भी आंदोलित है। मैं आपके माध्यम से हुक्मदेव जी से कहना चाहता हूं कि इस विवाद में दो या चार साल विलंब होता है तो नुकसान किसे होगा? मोतिहारी में विश्वविद्यालय खुले और बिहार के बच्चे पढ़ें, देश के बच्चे पढ़ें। गया में विश्वविद्यालय खुले, गया, मगध, बिहार और देश के बच्चे पढ़ें। आज आवश्यकता इस बात की है कि यहां केंद्रीय विश्वविद्यालय हो। बिहार ने केंदीय विश्वविद्यालय के लिए बरसों तक तपस्या की है। स्थानों की जंजलता में अगर रोक लगती है तो मैं समझता हूं कि यह बिहार के लिए बहुत बड़ी दुर्घटना होगी जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। बिहार ने अनेक बार इसी तरह के विवादों में अपना हक खोया है। मैं आज सदन में मांग करता हूं, माननीय मंत्री जी का विचार गया में खोलने का है तो जरूर खोलें। लेकिन मोतिहारी कोई छोटी जगह नहीं है।

महोदया, अगर हम गया और मोतिहारी, महात्मा गांधी और महात्मा बुद्ध की तुलना करने लगेंगे तो बहुत अजीब दृश्य पैदा होगा। हम तुलना क्यों कर रहे हैं? मैं कहता हूं कि बिहार के आज भी चार क्षेत्र हैं, मगध, भोजपुर, मिथिला, भागलपुर और अंगिका का इलाका। बिहार को चार विश्वविद्यालय चाहिए लेकिन अभी कोई एक खुलेगा। उसके बाद कल दूसरे की बारी आएगी, फिर तीसरे की आएगी, फिर चौथे की बारी आएगी। आप मोतिहारी के रूप में बिहार को विश्वविद्यालय दीजिए। यदि यह संभव नहीं है तो गया के रूप में बिहार को विश्वविद्यालय दीजिए। मैं नहीं जानता हूं कि विश्वविद्यालय खोलने के पैमाने क्या हैं? हम मापदंड पर बहस नहीं कर रहे हैं। हम केवल एक बात पुरजोर ताकत के साथ कहना चाहते हैं कि अब हमारी बरसों की मांग को पूरा करने का अवसर आया है और हम स्थानों के विवाद में इसे उलझाना नहीं चाहते हैं। भोला बाबू मगध के हैं। मैं नहीं समझता कि मगध में विश्वविद्यालय खोलने का वे विरोध कैसे कर सकते हैं?

महोदया, मैं जानता हूं कि हम बिहारी हैं, हम मगध से प्रेम करते हैं। चंपारन भी हमारा ही अंग है। मिथिला हमारा ही अंश है। हम किसी का विरोध नहीं कर सकते हैं। मैं आपके माध्यम से कहना चाहता हूं कि आपकी इच्छा है कि वर्ष 2020 तक भारत में उच्च शिक्षा का एनरोलमेंट 30 फीसदी पर ले जाएंगे जो कि आज दुनिया का

औसत है। ऐसे भी राष्ट्र हैं जहां 60-65 प्रतिशत लोग उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। भारत में आज उच्च शिक्षा का एनरोलमेंट 12 प्रतिशत के आसपास है और बिहार का छः से सात प्रतिशत है। बिहार के लोगों को रीजनल इम्बैलेंस दूर करने के लिए, ज्ञान भूमि को पुनर्स्थापित करने के लिए विश्वविद्यालय चाहिए, एक नहीं अनेक चाहिए।

महोदया, मैं अंतिम बात कहना चाहता हूं कि भारत में जब टाटा साहब को उद्योग लगाना था तब जमशेदपुर में देखा गया कि यहां पानी है, खदान है, यहां लोहा बनाया जा सकता है और यहां भारत का सबसे बड़ा कारखाना बनाया गया। बिहार की दौलत और संपत्ति से भारत समृद्ध बना। बिहार से धन और दौलत पैदा की गई थी लेकिन जब ज्ञान की सबसे बड़ी संस्था खोलने की बात आई तो साइंस इंस्टीट्यूट बंगलौर में बनाया गया। बिहार में उद्योग लगा और ज्ञान का उद्योग बंगलौर में लगा। आज हिंदुस्तान में बंगलौर ज्ञान का सबसे बड़ा केंद्र है। बिहार के साथ हमेशा ज्यादती हुई है। बंगलौर भी हमारा है, कर्नाटक भी हमारा है, बिहार भी हमारा है। क्योंकि बिहार में पिछड़ापन है, रीजनल इम्बैलेंस है। हमें परेशानी तब होती है जब कोई नहीं बताता है कि बिहार को आगे बढ़ाने के लिए लिट्रेसी रेट पर कितने दिनों में इस देश के औसत स्तर पर लाएंगे? यह कोई नहीं बताता कि धन और दौलत के आधार पर बिहार की गरीबी को दूर करके हम कब तक अन्य के बराबर लायेंगे। मैं आपके माध्यम से मांग करता हूं कि ज्ञान के क्षेत्र में रीजनल इम्बैलेन्सिज हैं, बिहार में केन्द्रीय संस्थान और विश्वविद्यालय कम हैं। आप जहां भी इन्हें खोलें, तत्काल खोलें। चाहे गया हो, मोतिहारी हो, हमारे जैसे लोग किसी का विरोध करके बिहार का विरोध नहीं कर सकते। आज हमारी चिर-परिचित मांग के पूरा होने का एक अवसर आया है। हम यूपीए सरकार को धन्यवाद देना चाहते हैं कि केन्द्रीय विश्वविद्यालयों में बिहार में भी एक विश्वविद्यालय खोलने का निर्णय हुआ है। लेकिन बिहार की सीमा में हम बिहारी लोग इस स्थान और उस स्थान की चर्चा करके इसे उलझा रहे हैं। क्या भोजपुर के इलाके में विश्वविद्यालय नहीं खुलना चाहिए। यहां मीना जी बैठी हैं, शाहबाद, जहां आजादी की जंग की सबसे बड़ी शुरूआत हुई थी, जिसके कारण आज यह देश आजाद हुआ। क्या हम उस वीर कुंवर सिंह की धरती पर नई यूनिवर्सिटी की मांग नहीं कर सकते। लेकिन चौथी यूनिवर्सिटी हो या तीसरी हो, वह पहले गया में हो जाए, मोतिहारी में हो जाए, यदि तीसरी या चौथी युनिवर्सिटी खुलेगी तो हम उसके लिए प्रतीक्षा करेंगे, हम कल के लिए प्रतीक्षा करेंगे। लेकिन आज यदि किसी कार्य में कोई कठिनाई कोई दल, कोई सरकार या कोई भी सदस्य पैदा करना चाहता है और केन्द्रीय विश्वविद्यालय को खोलने में यदि विवाद का कोई विषय बनाकर विलम्ब करता है तो मैं यह कह सकता हूं कि उसे बिहारी कहलाने का कोई हक नहीं बनता है। बिहार की एक मांग है और मैं पुरजोर ढंग से सदन में मांग करता हूं कि आप यहां केन्द्रीय विश्वविद्यालय खोलिये, लेकिन माननीय राज्य मंत्री जी और कपिल सिबल साहब इसके लिए विलम्ब मत कीजिए। आपको जहां भी केन्द्रीय विश्वविद्यालय खोलना हो, खोलिये, लेकिन हमें उलझन से बचाइये। बिहारियों को विश्वविद्यालय के लिए स्थान के विवाद में हम अपने केन्द्रीय विश्वविद्यालय को नहीं खो सकते हैं।

इन्हीं शब्दों के साथ आपने मुझे इस विषय पर बोलने का समय दिया, उसके लिए आपको धन्यवाद देते हुए मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

श्री सतपाल महाराज (गढ़वाल): सभापति महोदया, मैं श्री ओम प्रकाश यादव का जो प्रस्ताव है कि बिहार के मोतिहारी जिले में एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना की जाए, मैं उसके समर्थन में खड़ा हुआ हूं और मेरा सरकार से यह आग्रह है कि भारत को ज्ञान का देश बनाया जाए। भारत एक ऐसा देश रहा है, जहां पर गीता लिखी गई और कुरुक्षेत्र में जब गीता लिखी गई, उसका संवाद हुआ - धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवा, मामकाह पांडवश्चैव किमाकुर्वता संजय:। वह गीता जो सारे संसार को उपदेश देती है, सारे संसार का मार्गदर्शन करती है। वह गीता जो युद्ध के समय में अध्यात्म की चर्चा करती है। हमारा देश ज्ञान में सर्वोपरि रहा है और पराविद्या और अपराविद्या का ज्ञान भारत के अंदर रहा है। भारत के अंदर वेद प्रकट हुए, जो संसार की प्राचीनतम पुस्तकों में माने जाते हैं। अर्थात हमारा देश विश्व का गुरू रहा है, हमारा देश ज्ञान का गुरू रहा है। हमारा देश ज्ञानमय हुआ और उस ज्ञान के विस्तार के लिए हमें जगह-जगह केन्द्रीय विश्वविद्यालय खोलने चाहिए। We should make our country, a country of knowledge. क्योंकि मैं यह मानता हूं कि हर बीज के अंदर एक वृक्ष बनने की संभावना है। Every seed has the potential to become a tree. अगर उस बीज को आप बोयेंगे, उसे पानी देंगे, मिट्टी देंगे, खाद देंगे और यदि उसे धूप मिलेगी तो वह एक बड़े वृक्ष के रूप में खड़ा हो जायेगा। इसी प्रकार से अगर हम अपने बच्चों को, अपने देशवासियों को एक मौका दें और उन्हें विश्वविद्यालय प्रदान करें तो मैं समझता हूं कि निश्चित रूप में हमारा देश ज्ञानमय देश हो जायेगा और सारे संसार के अंदर भारत की दुंदुभि बजेगी।

मैं कहना चाहता हूं कि कुछ समय पहले मैं गढ़वाली और कुमाऊनी भाषा पर एक प्राइवेट मैम्बर बिल सदन में लाया था और मुझे इस सदन के अंदर आप सभी सदस्यों का समर्थन मिला और सबने अपनी-अपनी भाषा की बात की। किसी ने भोजपुरी भाषा की बात की, किसी ने हरियाणवी भाषा की बात की और किसी ने राजस्थानी भाषा की बात की। मैं बहुत ही कृतज्ञ हूं कि सभी ने अपनी-अपनी भाषा की बात करते हुए गढ़वाली और कुमाऊनी भाषा को राजभाषा बनाने की बात की। मंत्री जी ने भी यह कहा कि इसे परीक्षा से डीलिंग करने के बाद हमारा प्रयास होगा कि इसे 8वीं सूची में सम्मिलित करें। मेरा यही कहना है कि इसी प्रकार से सबका सहयोग लेते हुए मोतिहारी में विश्वविद्यालय की स्थापना निश्चित रूप से हो।

सभापति महोदय, मैं उत्तराखण्ड से आता हूँ। उत्तराखण्ड के अंदर दो भाग हैं। एक गढ़वाल का और एक कुमाऊं का भाग है। गढ़वाल को भी एक केंद्रीय विश्वविद्यालय मिला है। सरकार से मेरी यह भी प्रार्थना है कि कुमाऊं को भी एक विश्वविद्यालय मिलना चाहिए। कुमाऊं का क्षेत्र बहुत बड़ा है। कुमाऊंनी भाषा का साहित्य बड़ा प्राचीनतम साहित्य है। चाहे रामनगर हो, चाहे अल्मोड़ा हो, चाहे पिथौरागढ़ हो, वहां पर भी एक केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना होगी तो मैं समझता हूँ कि उत्तराखण्ड भी आगे बढ़ेगा।

मैं यह कहना चाहूंगा कि कुछ समय पहले जब नारायण दत्त तिवारी जी की सरकार थी तब उन्होंने हमें विदेश भेजा था। हम ऑस्ट्रेलिया गए थे। ऑस्ट्रेलिया के अंदर हमने देखा, वह हमें इंफार्मेशन टेक्नॉलाजी का एक सिस्टम दिखाने ले गए। वहां पर हमें यह बताया कि यह ऐसा सिस्टम है कि जिस पर हम बटन दबा कर प्राइम मिनिस्टर की कार को सारी हरी बत्तियों से गुजारते हैं। हमने देखा कि कोई सिक्योरिटी की आवश्यकता नहीं होती है। केवल बटन दबाने से आप सारी बत्तियों को ग्रीन कर दें और प्राइम मिनिस्टर चले जाएंगे। उनके साथ कोई सिक्योरिटी भी नहीं जाएगी। हमें बड़ी प्रसन्नता हुई। उसके बाद दूसरा सिस्टम हमें दिखाया गया, जिसमें उन्होंने बताया कि बस चल रही है और कहा कि अगर हम सारे ट्रैफिक को एक साथ छोड़ेंगे तो बसें रूक जाती हैं, इनके आगे छोटी कारें आ जाती हैं। इससे बचने के लिए हम सरकारी बसें को बीस मिनट पहले छोड़ते हैं, ग्रीन लाइट पहले हो जाती है, वे बसें आगे चलती हैं और पीछे से टैफिक चलता है। सारी बसें टाइम पर पहुंचती हैं। ऐसा सिस्टम देख कर के हम बड़े प्रभावित हुए। हमने कहा कि यह सिस्टम हमारे उत्तराखण्ड में भी आएगा तो हमें भी ज्यादा सिक्योरिटी की प्रॉब्लम नहीं होगी और ग्रीन लाइट के अंदर हमारे वीआईपी गुजर सकेंगे। हमने उनसे पूछा कि यह सिस्टम कैसे मिलेगा? यह सुन कर वहां का अफसर हंसने लगा। उसने कहा कि यह सिस्टम आपके बैंगलोर में ही बना है, आपके हिंदुस्तान में ही बना है और हम हिंदुस्तान से लाए हैं। तब हमें पता चला कि हमारे देश में कितनी क्षमता है, हमारे

देश के अंदर कितनी प्रतिभाएं हैं। इन प्रतिभाओं को विकसित होने का मौका मिले तो निश्चित रूप से मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ हमारा देश विश्व का गुरू बन कर दिखाएगा और अपनी प्रतिष्ठा को स्थापित करेगा। मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि आज हमारी यह भावना होनी चाहिए - एक आदमी एक ईट के भट्टे के पास गया। उसने देखा कि एक आदमी ईट बना रहा था। उसने पूछा भाई क्या कर रहे हो? उसने कहा कि देखता नहीं मैं रोज़ी-रोटी कमा रहा हूँ। वह आगे गया, एक दूसरा आदमी ईट बना रहा था। उसने उससे पूछा कि भाई क्या कर रहे हो? वह बोला कि भाई रोज़ी-रोटी कमा रहा हूँ, ईट बना रहा हूँ, लोगों के मकान बनेंगे। फिर वह और आगे गया। वहां तीसरा आदमी भी ईट बना रहा था। उसने भी पूछा कि भाई क्या कर रहे हो? उसने कहा भाई ईट बना रहा हूँ, मैं अपने देश का निर्माण कर रहा हूँ और इस ईट से मेरा देश बनेगा। जनता के मकान बनेंगे और आवास बनेंगे। आज हमारी भी यह भावना होनी चाहिए कि अगर हम किसी विश्वविद्यालय की स्थापना करते हैं तो हम देश का निर्माण करते हैं। हम उस विद्वत वर्ग का सम्मान करते हैं जो देश को आगे बढ़ाएगा। मैं कहूंगा कि हमारे देश के अंदर ऋषियों का यही कथन रहा -

" सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे संतु निरामया,
सर्वे भद्राणि पश्यंतु, माकश्चित् दुखभाग्भवेत"

आज उसी भावना के साथ मैं सरकार से यह प्रार्थना करता हूँ कि हमारे कुमाऊं मण्डल में भी एक केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना करें। चाहे राम नगर में करें, अल्मोड़ा में करें, पिथौरागढ़ में करें। यह बड़ा विस्तृत क्षेत्र है और उत्तराखण्ड की जनता को आगे पढ़ने और बढ़ने का मौका मिलेगा तो निश्चित रूप से देश का निर्माण होगा। मैं निश्चित रूप से मोतिहारी के अंदर केंद्रीय विश्वविद्यालय के स्थापना की मांग करता हूँ। मैं इसके साथ स्वयं को संबद्ध करता हूँ और मैं चाहता हूँ कि हमारे देश में शिक्षा के मंदिर स्थापित होंगे, तब भारत की जयगाथा गाई जाएगी। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपको धन्यवाद देता हूँ कि आपने मुझे बोलने का समय दिया।

श्रीमती रमा देवी (शिवहर): महोदया, मैं आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूं कि आज श्री ओम प्रकाश यादव जी, जो बिहार राज्य में उच्च शिक्षा की बढ़ती हुयी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए बिल लाए हैं, मैं उसके समर्थन में खड़ी होकर बोलना चाहती हूं।

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जो क्षेत्र है, जहां से हम लोग आते हैं, पूर्वी चंपारण से, जो उनकी कर्मभूमि रही, भितिहरवा से उन्होंने जो संघर्ष किया, पूर्वी चंपारण के लोगों ने उनको सहयोग किया, उस मिट्टी के तपे हुए, उस मिट्टी के मजबूत लोगों के लिए मैं मांग करने के लिए खड़ी हूं। मैं सबसे पहले यह धन्यवाद देना चाहती हूं कि बिहार के सभी सांसद, विधायक एवं जनप्रतिनिधियों का राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता से ऊपर उठकर मोतीहारी में केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना में केंद्रीय मंत्री श्री कपिल सिब्बल द्वारा की जा रही हठधर्मिता के खिलाफ एकजुट होकर विरोध करने के कदम की प्रशंसा करती हूं। मैं कहना चाहती हूं कि बिहार सरकार ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की सत्याग्रह भूमि मोतीहारी में केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना करने का फैसला लेने के बावजूद केंद्रीय मंत्री श्री कपिल सिब्बल जी द्वारा गया में विश्वविद्यालय स्थापित करने की बात कहकर बिहार के लोगों में खाई पैदा करने की कार्रवाई की है। मैंने दिनांक 9.4.2011 को मानव संसाधन विकास मंत्री जी को पत्र लिखकर परामर्शदात्री समिति की बैठक में चंपारण की जनआकांक्षा से उनको अवगत कराया था कि मोतीहारी में केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना नहीं करने पर संसद से सड़क तक आंदोलन किया जाएगा। आज समय आ गया है, केंद्र की फूट डालो और राज करो नीति के खिलाफ संपूर्ण बिहार की जनता एवं राजनीतिक दल दलगत भावना से ऊपर उठकर, हम लोग जिस लड़ाई को आगे बढ़ा रहे हैं, जिस चीज की मांग करने के लिए हम लोगों ने, सभी सांसदों ने जंतर मंतर पर धरना भी दिए और इन तक यह आवाज पहुंचाने की कोशिश भी की कि कम से कम वहां केंद्रीय विश्वविद्यालय होना चाहिए।

सबसे पहले तो मोतीहारी में विश्वविद्यालय की स्थापना में उत्तर बिहार के पूर्वी चंपारण, पश्चिमी चंपारण, मुजफ्फरपुर, वैशाली, सीतामढ़ी, शिवहर, बगहा, गोपालगंज, छपरा एवं सिवान आदि दर्जनों जिलों में उच्च शिक्षा जो संक्रमण के दौर से गुजर रही है, उसे गति प्रदान हो सकेगी और शिक्षा के क्षेत्र में जो असंतुलन कायम है, वह विकास की दौड़ में आगे निकल जाएगा।

महोदया, मैं यह कहना चाहती हूं कि मोतीहारी में अगर यह विश्वविद्यालय बनेगा, तो एक तरह से शिक्षा की धुरी के रूप में मोतीहारी विकसित होगा और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चे शिक्षा ग्रहण कर सकेंगे। 2011 की जनगणना के मुताबिक भारत में प्रति एक सौ व्यक्ति में से 74 और बिहार में 64 व्यक्ति साक्षर हैं, लेकिन पूर्वी और पश्चिमी चंपारण के प्रति सौ व्यक्ति में से 58 व्यक्ति ही साक्षर हैं। मैं चाहती हूं कि भारत के प्रति एक सौ में से बारह और बिहार में आठ व्यक्ति उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं, लेकिन चंपारण में सौ व्यक्तियों में से पांच व्यक्तियों को ही उच्च शिक्षा नसीब हो पाती है।

मैं मंत्री महोदय से यह मांग करती हूं कि मोतीहारी गांधी जी की कर्मभूमि है, सत्याग्रह की प्रयोगभूमि है और बापू ने यहां विद्यालय की बुनियाद रखी थी। संयुक्त चंपारण की आबादी तकरीबन एक करोड़ है और यहां एक भी विश्वविद्यालय नहीं है। मैं उनसे मांग कर रही हूं कि कम से कम हम लोगों की बात का महत्व रखते हुए वहां विश्वविद्यालय की स्थापना करने में कोताही नहीं बरतें। मोतीहारी में केंद्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना हेतु आधारभूत संरचना भी है। यहां आपको यह जानकारी देना आवश्यक है कि नार्थ इस्टर्न हिल केंद्रीय विश्वविद्यालय मेघालय शिलांग का निकटतम हवाई अड्डा गुवाहटी से काफी दूरी पर स्थित है। नागालैंड केंद्रीय विश्वविद्यालय की निकटतम गुवाहटी हवाई अड्डे की दूरी 307 किलोमीटर है। पांडिचेरी केंद्रीय विश्वविद्यालय से निकटतम हवाई अड्डे चेन्नई की दूरी 150 किलोमीटर है, अलीगढ़ मुस्लिम केंद्रीय विश्वविद्यालय की हवाई अड्डे कानपुर की दूरी 142 किलोमीटर है। विश्वभारती शांति निकेतन, पश्चिम बंगाल से निकटतम हवाई अड्डे कलकत्ता की दूरी 142 किलोमीटर है। जबकि मोतीहारी से निकटतम हवाई अड्डे पटना की दूरी वाया मुजफ्फरपुर (फोर लेन जो सड़क बन चुकी है) 170 किलोमीटर है। बौद्ध सर्किट की सड़क वाया केसरिया द्वारा तकरीबन दूरी 150 किलोमीटर है।

मोतिहारी से 50 किलोमीटर की दूरी पर रक्सौल हवाई अड्डा स्थित है जहाँ से पहले विभिन्न स्थानों के लिए हवाई जहाज़ उड़ान भरते थे। मोतिहारी में छोटे जहाज़ों के उतरने के लिए हवाई अड्डा अभी भी है। इसलिए हम चाहते हैं कि सरकार अपनी ज़िद को छोड़े। यह संपूर्ण बिहार की जनता और सभी राजनीतिक दलों की भावनाओं का प्रकटीकरण है। बिहार में चंपारण की धरती, जहाँ से मैं आती हूँ, वहाँ से मैं सांसद बनी, बिहार में मंत्री भी बनी और आज आपके बीच में खड़ी हूँ। वहाँ के बच्चे हमें माँ कहते हैं और चंपारण का एक-एक बच्चा चाहता है कि हमें आगे पढ़ाने के लिए रमादेवी गई हैं तो ज़रूर कुछ मांगकर लाएँगी। इसलिए मैं चाहती हूँ कि इस चीज़ को एकदम स्थापित करने के लिए, आप लोगों का ध्यान आकृष्ट करने के लिए मैं मंत्री महोदय से हठधर्मिता छोड़ने की बात कर रही हूँ। हम यह भी कहना चाहते हैं कि देश में कम से कम स्थापित केन्द्रीय विश्वविद्यालय आंध्र प्रदेश में तीन हैं, दिल्ली में चार हैं, उत्तर प्रदेश में चार हैं, पश्चिम बंगाल में एक है, महाराष्ट्र में एक है, अत्यंत छोटे राज्य असम में दो हैं, मणिपुर में दो हैं, मिज़ोरम में एक है, मेघालय में एक है, त्रिपुरा में एक है, नागालैण्ड में एक है, पांडिचेरी में एक

है तथा अरुणाचल प्रदेश में एक है, सिक्किम में एक है। यानी कुल 25 केन्द्रीय विश्वविद्यालय हैं। जिन राज्यों में केन्द्रीय विश्वविद्यालय नहीं थे, भारत सरकार ने वर्ष 2008 में वहाँ उच्च शिक्षा नीति के उपरोक्त अनुपात को बढ़ाने की दृष्टि से केन्द्रीय विश्वविद्यालयों की स्थापना का निर्णय लिया है जिनकी संख्या 15 है जो इस प्रकार हैं - बिहार में मोतिहारी, छत्तीसगढ़ में बिलासपुर, गुजरात में गांधीनगर, हरियाणा में महेन्द्रगढ़, हिमाचल प्रदेश में कंकरा, झारखंड में बामरे, जम्मू-कश्मीर में जम्मू एवं काश्मीर, कर्नाटक में गुलबर्गा, केरल में कासरगोड, मध्य प्रदेश में सागर, ओडीशा में कोरापुट, पंजाब में भटिंडा, राजस्थान में अजमेर-जयपुर पथ में, तथा उत्तराखंड में गढ़वाल, जिसमें 14 स्थानों पर तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री स्वर्गीय अर्जुन सिंह जी द्वारा स्थल निरीक्षण करवाकर राज्य सरकार की सहमति से कार्य प्रारंभ करा दिये गये थे। इनमें से अनेक, प्रदेश की राजधानियों से सैकड़ों किलोमीटर दूर स्थित है जहाँ संसाधनों की काफी कमी है। सिर्फ एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय जिसकी स्थापना चंपारण मोतिहारी में होनी है, अभी तक मूर्त रूप नहीं ले सका है और आप अनावश्यक बयान देकर पूरे राज्य की जनता को गुमराह कर जनता में आक्रोश पैदा कर रहे हैं। जबकि केन्द्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना करना भारत सरकार का संकल्प था जो उपरोक्त देश के पैमाने पर वितरित केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के अनुसार बिहार को भी एक सौभाग्य प्राप्त हुआ, जो कहीं से दया-दुआ की भीख नहीं है। यह देश के पैमाने पर अधिकार प्राप्त है। और आप अब कह रहे हैं कि मोतिहारी में कैम्पस और गया में यूनिवर्सिटी बनेगी चूँकि केन्द्रीय विश्वविद्यालय का माहौल नहीं है। संभवतः लगता है कि आप ऑक्सफोर्ड और कैंब्रिज विश्वविद्यालय से पढ़कर भारत में आए हैं।

शायद आपको बिहार के चंपारण की मिट्टी की जानकारी प्राप्त नहीं है। पूरे देश के पैमाने पर केबीसी के विजेता मोतिहारी के सुशील कुमार एवं डॉ. प्रकाश कुमार खेतान ने गिनीज़ बुक में विश्व रिकार्ड स्थापित कर यह साबित कर दिया है कि उच्च शिक्षा की उर्वरक भूमि चम्पारण की धरती है और चम्पारण के लोग यह चाह रहे हैं कि हम यहाँ पर विश्वविद्यालय की स्थापना करें। ज्ञातव्य है कि केन्द्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना भारत सरकार के संकल्प के अनुसार 2012 में 12 प्रतिशत उच्च शिक्षा प्राप्त करना निर्धारित लक्ष्य है जो देश में 10 प्रतिशत है और गरीब राज्य में अभी मात्र 8 प्रतिशत उच्च शिक्षा अवस्थित है। इसे 12 प्रतिशत पहुँचाना है जिसकी पूर्ति केन्द्रीय विश्वविद्यालय के द्वारा हो सकती है। इसका ग्राफ 50-60 प्रतिशत है परंतु भारत इसमें सर्वाधिक पीछे है जिसकी पूर्ति हेतु केन्द्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना की गई है। परंतु इस गरीब राज्य के मेधावी छात्र उच्च शिक्षा से लगातार वंचित रहे हैं। आखिर इसके लिए कौन ज़िम्मेदार है? इसकी भी ज़िम्मेदारी निर्धारित करने का संकल्प जनता ने ले लिया है जो काफी चिन्तनीय विषय है। मैं आग्रह करती हूँ कि अगर यहाँ विश्वविद्यालय बन जाएगा तो पूरे भारत में चंपारण का नाम और बापू की कर्मभूमि का नाम अजर-अमर रहेगा, हम लोगों का भी मान-सम्मान बढ़ेगा, लोगों की जो मंशा है, वह भी पूरी हो जाएगी। हम चाहते हैं कि हमारे मंत्री महोदय इस काम को करने के लिए पहल करें। वहाँ के मुख्य मंत्री जी ने भी ऐलान कर दिया है, उनकी भी प्रतिष्ठा की बात आ गई है।

उन्होंने लाखों जनता के बीच में यह बोला था। अगर इस तरह की बात होती है तो बहुत तकलीफ पहुंचेगा। हमारे बिहार राज्य के मुख्यमंत्री शिक्षा पर बहुत ध्यान दे रहे हैं। जो बच्चियां स्कूल नहीं जाती थीं, उनको उन्होंने साइकिल और ड्रेस देकर घर से निकालने का काम किया है। अगर विश्वविद्यालय बन जाएगा, चूंकि यह बाढ़-सुखाड़ का इलाका है और यहां के बच्चे बहुत पिछड़ गए हैं और गरीबी भी ज्यादा है तो वहां हर ढंग से उनको सफलता मिलेगी और आगे बढ़ेंगे। हमें भी गर्व होगा कि हम इन चीजों को उनके लिए लाए हैं। इसलिए मैं इसका पुरज़ोर समर्थन करती हूं और चाहती हूं कि वहां विश्वविद्यालय बने।

सभापति महोदया : इस संकल्प के लिए आवंटित समय समाप्त होने जा रहा है, लेकिन अभी चार-पांच सदस्य बोलने वाले हैं। यदि सदन की अनुमति हो तो हम एक घंटे का समय इस संकल्प पर चर्चा के लिए बढ़ा देते हैं।

कई माननीय सदस्य : ठीक है, महोदया। लेकिन ज़ीरो ऑवर कब लेंगे।

सभापति महोदया : यह संकल्प छः बजे तक चलेगा, उसके पश्चात हम शून्य काल लेंगे।

श्री सानछुमा खुंगुर बैसीमुथियारी (कोकराझार): सभापति महोदया, आपने मुझे ओम प्रकाश जी द्वारा बिहार के मोतीहारी जिले में एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए प्रस्तुत संकल्प पर चर्चा में भाग लेने का अवसर प्रदान किया, इसके लिए मैं आपका आभार प्रकट करता हूं।

महोदया, मैं पूरे दिल-दिमाग से ओम प्रकाश जी के संकल्प का समर्थन करता हूं। I do strongly support the Resolution moved by Shri Om Prakash Yadav regarding the urgent need of setting up of a Central University in Motihari District of Bihar. So far as my observation is concerned, this particular demand raised by Shri Om Prakash Yadav is very much genuine. It is a long-felt need and it deserves special consideration from the Government of India.

Madam, in recent times, I would like to urge upon the Government of India, through you, to take appropriate steps to help upgrade the existing Bodoland State University to a full-fledged Central University. In 2009, the Government of Assam had taken a decision in the State Legislative Assembly to set up a State University in the name and style of Bodoland University. But so far as the financial condition of the State Government of Assam is concerned, the Government of Assam will not be in a position to run all the State Universities in a smooth way. So, in view of this kind of a situation, the immediate upgradation of the present day Bodoland State University to a full-fledged Central University is the one and the only solution. It is a very much genuine demand, a long-felt need and it deserves special consideration from the Government of India. क्योंकि हमारे स्वशासित बोडोलैंड अंचल की आबादी 30 लाख है। 30 लाख की आबादी के लिए वर्ष 2009 के पहले कोई विश्वविद्यालय नहीं था। इसलिए मेरी मांग है कि हमारे बोडोलैंड विश्वविद्यालय को भारत सरकार केन्द्रीय विश्वविद्यालय के तौर पर अपग्रेड करे।

इसी के साथ-साथ मैं यहां कुछ जैनुइन डिमान्ड्स को यहां प्रस्तुत करना चाहता हूं। हमारा बोडोलैंड अंचल बहुत पिछड़ा हुआ है। हमें स्वायत्ता मिले 35 वर्ष हो चुके हैं,

लेकिन वहां के हालात अभी भी बहुत मुश्किल हैं। इसलिए मेरी मांग है कि हमारे बोडोलैंड अंचल के लिए एक आईआईटी, एक आईआईएम, एक केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय होना चाहिए। हमारे बोडोलैंड में दस आई.टी.आई, दस पॉलिटेक्नीक संस्थान, एक एन.आई.टी., एम्स मॉडल का एक इंस्टीच्यूट, कम से कम दो जवाहर नवोदय विद्यालय, और दो केन्द्रीय विद्यालय की बहुत आवश्यकता है। उसके साथ-साथ हमें एक नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ साइंस एण्ड टेक्नॉलोजी एण्ड रिसर्च चाहिए। अगर दिल्ली में और दिल्ली के साथ-साथ विभिन्न प्रदेशों में भारी संख्या में विश्वविद्यालय एवं शिक्षण संस्थान हो सकते हैं तो हमारे बोडोलैण्ड में क्यों नहीं हो सकता है? This is a vital question.

मैडम, मैं आपका ध्यान एक मुद्दे की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। हमारे असम में जितने बोडो लड़के-लड़कियां हैं, वे बोडो भाषा के माध्यम से शिक्षा ग्रहण करते हैं। लेकिन आज असम सरकार को बोडो माध्यम के जितने भी प्राइमरी, मिडिल, और हाई स्कूल्स हैं, उसे चलाने और संभालने में बहुत तकलीफ हो रही है। इसलिए मैं मांग करता हूं कि भारत सरकार को हमारे असम सरकार को, बोडोलैंड टेरिटोरियल काउंसिल गवर्नमेंट को एक हजार करोड़ रुपए देना बहुत जरूरी है। जितने वेंचर स्कूल हैं, वे आम जनता के द्वारा प्रसारित हों और उन स्कूलों का प्रोविंसिएलाइज्ड होना बहुत जरूरी है।

मैडम, मैं ज्यादा बोलना नहीं चाहता हूं। आखिर में, मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से मांग करना चाहता हूं कि मैंने जितने मांग यहां रखे हैं, उन मांगों को पूरा करने के लिए अतिशीघ्र कदम उठाने की जरूरत है।

श्री अर्जुन राम मेघवाल (बीकानेर): सभापति महोदया, मैं श्री ओम प्रकाश यादव द्वारा लाए गए संकल्प कि मोतीहारी में केन्द्रीय विश्वविद्यालय खुलना चाहिए, उस पर बोलने के लिए खड़ा हुआ हूं। जो बेसिक सेंट्रल यूनिवर्सिटी एक्ट है, मैं उस पर आपके माध्यम से अपनी बात भारत सरकार तक पहुंचाना चाहता हूं।

भारत सरकार के द्वारा सेंट्रल यूनिवर्सिटी एक्ट आया। उस एक्ट के माध्यम से देश में 44 केन्द्रीय विश्वविद्यालय बनाए गए। बजट में इसकी घोषणा हुई। उसमें आपने बजट के माध्यम से राज्य आवंटित किए, और उसकी लोकेशन क्या होगी, यह नहीं बतायी। आपने यह राज्य सरकार पर छोड़ दिया। राज्य सरकार को आपने कहा कि आप भूमि उपलब्ध कराएंगे। भवन और अन्य सारा इंफ्रास्ट्रक्चर को खड़ा करने के लिए आपने योजना बनायी कि हम 1500 करोड़ रुपए देंगे। यह एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय का पैकेज था। इस पैकेज में हमारे राजस्थान को भी केन्द्रीय विश्वविद्यालय मिला, बिहार को भी मिला। कई राज्यों, जैसे जम्मू एवं कश्मीर को दो केन्द्रीय विश्वविद्यालय भी मिले।

महोदया, मेरा इस संबंध में यह कहना है कि रीजनल इम्बैलेंस दूर करने के लिए केन्द्रीय विश्वविद्यालय का प्रोजेक्ट था। केन्द्रीय विश्वविद्यालय के अंतर्गत जो कार्य होने वाला था, वह रिसर्च का था।

बिहार में मोतीहारी पिछड़ा हुआ क्षेत्र है। अगर मोतीहारी में केन्द्रीय विश्वविद्यालय खुलता है तो एक तो रीजनल इम्बैलेंस दूर होता है और दूसरा गांधी, श्री राम, गौतम ऋषि, वाल्मीकि ऋषि पर रिसर्च करने का अवसर प्राप्त होता है। केन्द्रीय विश्वविद्यालय खुलने के लिए इससे बढ़िया स्थान और क्या हो सकता है? अगर 1500 करोड़ रुपए उस मोतीहारी में लगेंगे तो उसका रीजनल इम्बैलेंस भी दूर होगा। लेकिन, भारत सरकार को क्या आपत्ति है? भारत सरकार लोकेशन तय करने के लिए एक कमेटी बनाती है। उस कमेटी में कुछ प्रोफेसर होते हैं। वे प्रोफेसर जाकर देखते हैं कि कनेक्टिविटी है या नहीं। जैसे मेरे बीकानेर में केन्द्रीय विश्वविद्यालय आना चाहिए था, वहां एक कमेटी बनी। उस कमेटी ने कहा कि बीकानेर में केन्द्रीय विश्वविद्यालय होना चाहिए। एचआरडी मिनिस्ट्री से वहां एक्सपर्ट गए कमेटी के माध्यम से।

18.00 hrs.

उन्होंने कहा कि बीकानेर में हवाई अड्डा नहीं है, इसलिए बीकानेर में आपको सैण्ट्रल यूनिवर्सिटी नहीं दे सकते और ऐसा ही केस मोतिहारी में भी हुआ। मोतिहारी में भी आपने यह कहा कि Motihari is not connected with air facility. और किसने कहा, वह जो प्रोफेसर हैं, वे कह रहे हैं कि हमारे आने जाने में इससे तकलीफ होगी। आप सैण्ट्रल यूनिवर्सिटी किसके लिए बना रहे हो...(व्यवधान)

SHRI SANSUMA KHUNGGUR BWISWMUTHIARY : This kind of condition should not be there because our Bodoland area also does not have an airport.

SHRI ARJUN RAM MEGHWAL : You are also not getting the Central University because of that.

आप प्रोफेसर्स के लिए बना रहे हो या बच्चों के लिए बना रहे हो या रिसर्च के लिए बना रहे हो, किसके लिए बना रहे हो? You should decide the policy कि आपकी पॉलिसी क्या होनी चाहिए।

सभापति महोदया : अर्जुन राम मेघवाल जी, अब 6 बज गये हैं। आप अगली बार इसको कंटीन्यू करेंगे। अभी इसे समाप्त करते हैं।

अभी शून्य काल शुरू करते हैं।

श्री सतपाल महाराज (गढ़वाल): महोदया, मैं आपसे यहां से बोलने की अनुमति मांगता हूं।

सभापति महोदया: ठीक है।